Chapter-7

सप्तम् अध्याय

संदर्भ-त्रयी

में

निरूपित

मानवीय समस्याओं

का

आकलन

प्रास्ताविक :-

उपन्यास और कहानी ये दोनों समाजधर्मी विधाएँ हैं। इसका अर्थ यह कतई नहीं कि दूसरी विधाओं में समाज का प्रतिबिम्ब नहीं होता। साहित्य और समाज का तो बड़ा गहरा नाता है। समाज के बिना साहित्य का निर्माण असंभव है और साहित्य समाज का दिशा-निर्देश करता है, उसको गति प्रदान करता है। परन्तु अपनी वस्तुनिष्ठ दृष्टि के कारण कथा-साहित्य में- उपन्यास और कहानी में - समाज की मानवीय समस्याओं का सविशेष निरूपण होता है। कोई उपन्यास ऐसा नहीं होता, जिसमें कोई मानवीय समस्या न हो, कोई ऐसी कहानी नहीं होती, जिसमें परोक्ष ही सही कोई मानवीय समस्या न हो; यहाँ तक कि रूपवादी और कलावादी कथाकारों के भी उपन्यासों तथा कहानियों में कोई-न-कोई समस्या तो होती ही है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में हमने शैलेश मटियानी की उन कहानियों को लिया है जिनमें दलित, ईसाई और मुस्लिम संदर्भ मिलते हैं। तीन पृथक अध्यायों में हमने उक्त संदर्भ-त्रयी पर विस्तार से चर्चा की है। प्रस्तुत अध्याय में उन कहानियों को केन्द्र में रखते हुए उनमें आकलित समस्याओं को विश्लेषित करने का प्रयत्न किया

गया है।

मानवीय समस्याओं से हमारा तात्पर्य उन समस्याओं से है जिनका संबंध मानव-समाज और सभ्यता से है। समग्र सचराचर जीवन समस्याओं से परिव्याप्त है। पशु-पक्षियों तथा जीव-जन्तुओं के सामने भी कई प्रकार की समस्याएँ होती हैं, किन्तु उनकी अधिकांश समस्याएँ उनके अपने अस्तित्व को बरकरार रखने की होती है। लेकिन मनुष्यों की समस्याएँ मानव-निर्मित हैं और जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होता जायेगा, मानवीय समस्याओं में बढ़ोत्तरी भी होती ही जायेगी, इतना ही नहीं, नयी-नयी समस्याओं की किस्में भी निकलती जायेंगी। जैसे- मशीनीकरण, औद्योगीकरण आया तो उसके साथ अनेक नयी समस्याएँ भी मुंह बाये खड़ी हो गयीं। वायु-प्रदूषण और जल-प्रदूषण ही नहीं अब महानगरों में ध्वनि-प्रदूषण भी बढ़ रहा है। कहने का अभिप्राय यह कि सभ्यता के विकास के साथ मानवीय जीवन की जटिलता भी बढ़ती जायेगी और उतने ही परिमाण में उसकी समस्याएँ भी बढेंगी।

इन समस्याओं का स्वरूप भिन्न-भिन्न होता है। कुछ समस्याएँ सामाजिक होती हैं, कुछ पारिवारिक होती हैं, कुछ आर्थिक होती हैं, कुछ राजनीतिक, धार्मिक और नैतिक होती हैं। आजकल आपाधापी और दौड़धूप भरी जिन्दगी में मानसिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं में निरंतर इजाफा हो रहा है।

दहेज की समस्या सामाजिक समस्या है, पारिवारिक विघटन पारिवारिक समस्याएँ, गरीबी आर्थिक समस्याएँ, हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य राजनीतिक समस्या है। और एक हैरतअंगेज बात यह है कि धर्म का उद्देश्य मानव-जीवन को बेहतर बनाने का है, मानव जीवन की समस्याओं को हरने का है, पर आज धर्म के कारण अनेक नयी समस्याएँ आकार ले रही हैं। कारण मात्र एक है सबसे बड़े धर्म, प्रेम-धर्म को हम निरंतर भूलते जा रहे हैं। हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि- ''बढ़ेगा प्यार प्यार से, तयशुदा यह बात है।'' पर इस

महासत्य को नजरन्दाज करने के कारण ही आज धर्म के कारण अनेक समस्याएँ पैदा हो रही हैं। उन्हें हम धार्मिक समस्याएँ कह सकते हैं। वैसे मेरी तुच्छ बुद्धि में तो यही आता है कि समस्याओं को पैदा करने वाले धर्म को, धर्म नहीं, ''छद्म धर्म'' कहना चाहिए।

खैर, हम चर्चा समस्या के स्वरूप की कर रहे थे। तो समस्याएँ भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हैं, जैसा कि ऊपर निर्देष्ट किया गया है। किन्तु एक बात की ओर हम ध्यान आकृष्ट करना चाहेंगे कि ये समस्याएँ भी परस्पर अनुस्यूत होती है। कई बार एक समस्या जो सामाजिक प्रकार की होती है, वह पारिवारिक या आर्थिक भी हो सकती है और कई बार एक प्रकार की समस्या किसी दूसरे प्रकार की समस्या को जन्म देती है। उदाहरणतया जगदीश चन्द्र कृत उपन्यास ''धरती धन न अपना'' के काली की समस्या, पक्का मकान बनाने में पुनः खाली खम हो जाने की समस्या, प्रकटतः तो आर्थिक समस्या है, पर यदि उसके कारणों की गहरी छानबीन करें तो ज्ञात होगा कि काली के अचेतन मन में गाँव के चौधरियों को दिखा देने की जो भावना है उसके कारण वह पक्का मकान बनवाना चाहता था और उसके पीछे अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक दबाव थे।

अतः इस अध्याय में हमने पूर्वोक्त संदर्भ त्रयी पर आधारित विविध प्रकार की सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक,धार्मिक इत्यादि १५-२० समस्याओं की सोदाहरण चर्चा करने का उपक्रम रखा है।

(१) दरिद्रता या गरीबी की समस्या :-

दरिद्रता या गरीबी की समस्या मटियानी जी की प्रायः कहानियों में दृष्टिगोचर होती है, क्योंकि उन्होंने निम्न से निम्नतम प्रकार के लोगों के जीवन को चित्रित किया है। चर्चित कहानियों में ''घुघुतिया त्यौहार'', ''सतजुगिया आदमी'', ''प्रेतमुक्ति'', ''लीक'', ''मिसेज ग्रीनवुड'', ''झुरमुट'', ''कठफोडवा'', ''छाक'', ''हलाल'' प्रभृति कहानियों को

छोड़कर लगभग तमाम कहानियों में दरिद्रता या गरीबी की समस्या को उकेरा गया है। संदर्भ-त्रयी की दृष्टि से विचार करें तो दरिद्रता या गरीबी की समस्या सर्वाधिक रूप से मुस्लिम संदर्भ की कहानियों में उपलब्ध होती है। उसके बाद दूसरे क्रम पर दलित-संदर्भ की कहानियाँ और तीसरे क्रम पर ईसाई संदर्भ की कहानियाँ आती हैं।

मुस्लिम संदर्भ की कहानियों में ''मैमूद'', ''रहमतुल्ला'', ''इब्दूमलंग'', ''गरीबुल्ला'', ''पत्थर'', ''गोपुली गफूरन'', ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'', ''दो दुःखों का एक सुख'', ''इल्लेस्वामी'' आदि कहानियों में हमें यह समस्या दिखाई पड़ती है। केवल ''हलाल'' या ''सिने गीतकार'' जैसी दो-एक कहानियों में यह गरीबी की समस्या नहीं है। उक्त कहानियों पर यदि विचार करें तो ''रहमतुल्ला'', ''पत्थर'',''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'' आदि कहानियों में हमें भीषण गरीबी दृष्टिगोचर होती है।

''रहमतुल्ला'' कहानी में दरिद्रता या गरीबी की समस्या उसके मुख्य पात्र रहमतुल्ला के संदर्भ में मिलती है। वैसे तो रहमतुल्ला मजे से था, लेकिन उसकी कमबख्ती की शुरुआत उसके माँ-बाप के मर जाने के बाद से शुरू होती है और उसके माँ-बाप उसके जन्म के तुरन्त बाद मर जाते हैं, अतः उसकी समस्या का प्रारंभ उसके जन्म के बाद से ही शुरू हो जाता है। रहमतुल्ला खिमुली और फतेउल्ला की औलाद है। खिमुली विधवा हो जाती है। उसके बाद गरीबी के कारण ही यह फतेउल्ला से निकाह पढ़ लेती है। हम पहले निर्दिष्ट कर चुके हैं कि ये मानवीय समस्याएँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई होती हैं। यहाँ धर्मान्तर की समस्या के पीछे ख़िमुली की गरीबी ही कारणभूत है। जब खिमुली और फतेउल्ला की मृत्यु हो जाती है, तब कुछ साल रहमतुल्ला मसीहा मस्जिद के अजानची मुसीफुदौला के पास रहता है। वह समय उसका अच्छा जाता है। फतेउल्ला का भाई करीमुल्ला दो आँखों की शरम के मारे रहमतुल्ला को रख भी लेता पर उसकी बीबी बड़ी जालिम औरत है। कुछ समय वह

घंटीवाले सूरदास बाबा के पास रहता है । पर नसीब का इतना खोटा है कि जो भी उसे आश्रय देता है, वह अल्ला को प्यारा हो जाता है । जिन्दगी की छः सात साल की उम्र के बाद से वह एक बुचड़खाने में काम करता है । करीमुल्ला की बेगम गुलशनबीबी रहमतुल्ला को रखने के लिए तैयार नहीं होती उसके पीछे गरीबी भी एक बहुत बड़ा कारण है । उसके अपने पौन दर्जन बच्चे हैं । उनके लिए तो टुकड़े जुटते नहीं हैं, उसमें वह इस नयी मुसीबत को रखने के लिए तैयार नहीं है ।[१] खिमुली का भाई उदेराम के मन में भी अपने यतीम भांजे के लिए दया जगती है , पर उसकी औरत रखने को तैयार नहीं होती, उसमें भी एक कारण गरीबी है ।

''पत्थर'' कहानी का रमजानी अपने बीबी-बच्चे से भी भीख मंगवाता है । रमजानी की बीबी दो-चार घरों में काम करके अपने शौहर के सारे शौक पूरे करती है । इस कहानी में जो मुस्लिम परिवेश है,जो मुस्लिम समाज है, वे सब गरीबी के शिकार हैं । पर रमजानी की गरीबी का एक बड़ा कारण उसकी अपनी काहिली और हरामखोरी है । गफूरन बेचारी मेहनत-मजदूरी करके उसका पेट ही नहीं पालती,उसके पान-सिगारेट के शौक भी पूरे करती हे । बीच में जब वह पेट से होती है और आखिरी महीनों में काम नहीं कर सकती, तब रमजानी के खाने के भी लाले पड़ जाते हैं ।[२] कहानी ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'' में मुंबई की झोंपड़पट्टी की भीषण दरिद्रता को लेखक ने चित्रित किया है । उसमें नसीम और करावा जैसी लड़कियों को दो वक्त की रोटी के लिये अपने जिस्म का सौदा करना पड़ता है ।[३] मैमूद कहानी में मध्यमर्गीय मुस्लिम परिवार की गरीबी को बताया है, जहाँ झूठी शान बघारने के लिए मेहमानों की खातिर के लिए जद्दन बी के उस बकरे को काटा जाता है जिसे वह अपना बेटा समझती थी । ''झब्बूमलंग'' कहानी का झब्बू होटल के बरतनों को साफ करके अपना पेट भरता है । ''गरीबुल्ला'' में वर्णित गरीबी आघात के कारण है । अपनी जान से भी प्यारी बेगम और अम्मी की मौत के कारण मुरादाबाद का मशहूर कलईगर मुंबई आकर भीखमंगों

की जिन्दगी बसर करता है। ''गोपुली गफूरन'' में गोपुली शिल्पकारिन को गफूरन इसलिए बनना पड़ता है कि पति देवराम की मृत्यु के बाद अपने दो बेटों को पालने के लिए उसके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था।[४]

''दो दुःखों का एक सुख'' कहानी में मिरदुला कानी करमियां कोढ़ी और अन्धा सूरदास भीख मांगने का काम करते हैं। ''इल्लेस्वामी'' कहानी के नायक स्वामी की बहिन को अपने तथा भाई के लिए बेंगलोर के वेंकटेश्वर मंदिर के सामने भीख मांगनी पड़ती है और ऐसे में ही एक दिन भीषण गरमी के कारण वह दम तोड़ देती है। इस कहानी की आयशाबाई एक वेश्या है जो गरीबी के कारण ही वेश्यावृत्ति की ओर आई है।

ईसाई संदर्भ की कहानियों में ''दीक्षा'' और ''नीत्शी'' में दरिद्रता और गरीबी का चित्रण मिलता है। ''दीक्षा'' कहानी की सावित्री एक दलित स्त्री है। उसके पति की हैजे में मृत्यु होती है। हैजे में प्रायः गरीब लोग ही मरते हैं, क्योंकि उनके पास दवा-दारू और इलाज के लिए पैसे नहीं होते। पति की मृत्यु के उपरान्त आश्रय उसे केवल ईसाई समाज में मिलता है, अतः उसे ईसाई धर्म अंगीकार करना पड़ता है। यहाँ भी धर्म परिवर्तन के पीछे गरीबी और आश्रयहीनता ही मुख्य कारण है। ''नीत्शी'' कहानी में तिबेट की गरीब लामा स्त्रियों का वर्णन मिलता है। गरीबी और गंदगी के कारण ही उनके बच्चे पैदा होते ही मर जाते हैं।[६] यहाँ लामा लड़कियों के यौन शोषण की बात भी आती है।

दलित-संदर्भ की कहानियों में ''नंगा'', ''लाटी'', ''चील'', ''प्यास'', ''महाभोज'', ''मिट्टी'', ''भय'' आदि कहानियों में गरीबी की समस्या को आकलित किया गया है। इनमें भी ''चील'', ''प्यास'', ''मिट्टी'', ''भय''आदि कहानियों में भीषण गरीबी का चित्रण है। ''चील'' कहानी का रामखिलावन मुर्दों के पीछे जो पैसे फेंके जाते हैं उनको लूटने जाता है। बाप-शराबी-जुआरी था। वह भी नहीं रहा। तब माँ लोगों के घरों का चौका-बरतन करके अपने बेटे रामखिलावन को पालती है। मां की

बीमारी के कारण रामखिलावन दो दिन से भूखा है । उसने अपने साथ वाले छोकरों से सुन रखा था कि आश्रम वाले बाबाजी छोकरों को अपने कमरे में बुलाकर चोकलेट मिठाई वगैरह देते हैं, अतः वह आश्रम के चक्कर भी काटता है,पर गंदा और बदसूरत होने के कारण बाबाजी उसे भगा देते हैं । मुर्दों के पीछे पैसे और जलेबी लेने गया था वहाँ पैसों की छीना-झपटी में एक लड़के से मारामारी करता है,तब वह लड़का जाते-जाते उसे कहता है कि जा साले जा, तू भी तो अपनी माँ के पीछे पैसे फेंकेगा ।[७]

"प्यास" कहानी में मुंबई की झोंपड़पट्टी में रहने वाले भिखारियों, भिखारियों के दलालों, जेबकतरों और उठाईगीर लोगों के जीवन को चित्रित किया है । अतः गरीबी तो यहाँ मिलेगी ही । इस कहानी में पांडुरंग मामा का एक पात्र है । वे भिखारियों के दलाल हैं । अट्ठावन वर्ष की अपनी उम्र में उन्होंने दस साल खुद भीख मांगकर और बत्तीस साल दूसरों से भीख मंगवाकर मजे के साथ गुजार दिये हैं । इस कहानी की कृष्णाबाई एक विधवा भिखारिन है । बच्चे वाली भिखारिनों को उसके मुकाबले ज्यादा भीख मिलती है । अतः उसने मामा को बोल रखा था कि कोई बच्चा उसके हाथ लगे तो वह सबसे पहले उससे बात करे । ऐसे में एक दिन एक बच्चा मामा के हाथ लग जाता है । वह कृष्णाबाई को बुलाकर कहता है- "बाई, नकद पचास की रकम और भांजे का रिश्ता लगाके इस छोकरे को खरीदा है । सूरत का गोरा और खूबसूरत है । भीख मांगते समय होंशियारी से काम लोगी, तो चांदी पिटवा देगा छोकरा ! किसी ऊँचे घराने की लक्ष्मी की औलाद मालूम पड़ता है । नामे का सिकन्दर निकलेगा । तो बाई, जब तक इस छोकरे से बिजनेस करोगी, एक रूपया रोज लूंगा और अगर तुम्हारी किसी लापरवाही या बीमारी से यह मर गया तो तुम्हें पूरे पचास की रकम एक मुश्त देनी होगी ।"[८] इस पर जब कृष्णाबाई कुछ नना-नुच करती है, तब भीख के इस "बिजनेस" का एक दूसरा पहलू सामने आता है । कृष्णाबाई अपनी आशंका जताती है कि बच्चा बहुत नाजुक तबीयत है , अतः अचानक यदि वह मर गया तो इतने पैसे

वह कहाँ से लायेगी। इसके प्रत्युत्तर में मामा जो जवाब देते हैं इससे इतना तो प्रमाणित हो जाता है कि इस बिजनेस की डॉक्टरेट की डिग्री उनके पास है। ''तो रेन देरे, फिर बाई ! हो गया तुम्हारा धंधा। अरी कमअकल ! जब तक जिन्दा रहेगा तब तक तो चांदी ही पिटवायेगा छोकरा तेरे लिए, मगर जिस दिन मर गया, उस दिन अशर्फियाँ उगल देगा, अशिर्फियाँ ! बाई, फक्त एक गज लाल कफन का कपड़ा खरीद करके अपने इस कलेजे के टुकड़े को माहिम के कब्रिस्तान में दफन करने या सोनापुर के श्मशान में फूंकने के लिए भीख मांगते-मांगते तू एक ही दिन में सौ-डेढ़ सौ पीट लेगी। और छोकरे की मिट्टी को इस सर्दी के मौसम में दो-तीन दिनों तक सही-सलामत रखना कोई बड़ी बात नहीं है। और तीन दिनों में पूरे बम्बई शहर में फिराई जा सकती है मिट्टी।''[१]

''भय'' कहानी में तो भीख मांगने के वास्ते मुंबई में मुर्दों का जो करोबार चलता है, उसका चित्रण किया गया है। ''मिट्टी'' कहानी की गनेशी अपने बच्चों को पालने के लिए लालमन नामक कोढ़ी की गाड़ी ढोती है। लालमन रिश्ते में उसका कुछ भी नहीं लगता, मगर अपने बच्चों के खातिर गनेशी उसके गू-मूतर सब साफ करती है और सेवा तो इतनी करती है कि कोई ब्याहता क्या करेगी। ''महाभोज'' कहानी की शिवरती का पति बेकार है। अपने चार-पाँच बच्चों, पति तथा बीमार ससुर को खिलाने-पिलाने तथा तिमारदारी के लिए उसे तनतोड़ काम करना पड़ता है। अंत में ससुर के दम तोड़ देने पर वह अपनी चांदी की करधनी बेचकर उसका कारज निबटाती है।

अभिप्राय यह कि मटियानी जी की उक्त संदर्भ त्रयी की कहानियों में उन्होंने गरीबी या दरिद्रता की समस्या का यथार्थ नग्न चित्रण किया है। यहाँ पर उनकी तुलना उर्दू के महान कथाकार सआदत हसन मण्टो तथा रूसी भाषी के समर्थ कथाकार गोर्की से कर सकते हैं। प्रेमचंद की कहानियों में भी गरीबी है, किन्तु मटियानीजी के यहाँ जो गरीबी मिलती है वह हर दरजे

की है । यहाँ उन्होंने निम्न तो क्या चतुर्थ वर्ग के लोगों की गरीबी को उकेरा है ।

२. जातिगत नफ़रत की समस्या :-

जातिगत नफ़रत की भावना हमारे समाज का एक गन्दा फोड़ा है । यह कितने आश्चर्य की बात है कि एक तरफ दुनिया के समस्त धर्मों और मजहबों में प्यार और मुहब्बत की बड़ी-बड़ी बातें की गई हैं, लेकिन कदाचित धर्म और मजहब के नाम पर ही जातिगत जहर को सबसे ज्यादा उगला गया है । मटियानी जी की कहानियों में "रहमतुल्ला" , "गोपुली गफूरन", "लाटी", "सतजुगिया आदमी", "नेताजी की चुटिया" जैसी कहानियों में उसे रेखांकित किया जा सकता है ।

"रहमतुल्ला" कहानी में रहमतुल्ला खिमुली और फतेउल्ला नामक एक मुसलमान की औलाद है । खिमुली का भाई उदेराम है । अतः वह डोम या चमार जाति की है । खिमुली जब विधवा हो जाती है तब फतेउल्ला ही उसका हाथ थामता है । यह देखने में आता है कि हिन्दू जाति के उच्चवर्णीय लोग निम्न-जातियों की बहन-बेटियों पर हाथ साफ करने में तो कोई परहेज या गुरेज नहीं करते । परन्तु जब उसका हाथ थामने की बात आती है तब कोई माई का लाल सामने नहीं आता । "गोपुली गफूरन" कहानी में भी हम इसी तथ्य को लक्षित कर सकते हैं । दुर्भाग्य से जब रहमतुल्ला का जन्म होता है तो उसके कुछ समय बाद ही उसके माता-पिता कालकवलित हो जाते हैं और रहमतुल्ला को यतीमों-सी जिंदगी गुजारनी पड़ती है । बहन खिमुली के न रहने पर भाई उदेराम का दिल कुछ पसीजता है और वह उसे अपने यहाँ ले आता है, पर उसकी कर्कसा और कलिहारी औरत उसे मजबूर करती है कि वह उसे जहाँ से लाया है, वहीं छोड़ आये । इसके पीछे गरीबी तो कारणभूत है ही, पर जातिगत नफ़रत भी एक महत्वपूर्ण कारण है । उदेराम की घरवाली उस पर बरस पड़ती है-"ठैरो हो, जरा इस मुसलिये को कंधों पर से उतार के उधर

ही रखो । और इस समय तो खैर रात हो गई है, कल सवेरे ही उसे जहाँ से लाये हो वहीं पहुँचा आओ । इसको तो तुम इस समय ला रहे हो,मगर हमारे बिरादरों में गंगाराम ससुरजी ने तो आज दोपहर से ही हमारी चिलम में तमाकू पीना छोड़ दिया है, कि उदिया से कह देना, अगर उसने उस मुसल्टे की औलाद को अपने घर में ठौर दी तो बिरादरी से बरखास्त कर दिया जायेगा । तुम्हारी तो मति हरण हो गई है । ऐसे जी बिलमाने वाले की हमें कोई जरूरत नहीं है,जो घर पहुँचने से पहले ही जी का जंजाल बन जाए। बाप रे ! मुसल्टों की औलाद से तो हम निपूते ही भले।''[१०]

फतेउल्ला जब मर जाता है और खिमुली भी नहीं रहती, तब मुहल्ले के गबरू चाचा फतेउल्ला के भाई करीमुल्ला को कहते हैं कि भाई का लड़का है, इस लिहाज से रहमतुल्ला को उसे रख लेना चाहिए। उस समय करीमुल्ला की बीबी गुलशन बी जो बातें करती हैं वे भी गौरतलब है- ''गबरू चाचा से ये क्यों नहीं कैते कि वो कौन-सी जात का छोकरा है। अजी, असल मुसलमानी का होता तो घर से बाहर कदम न निकालता। मगर डोमिनी की औलाद है चोट्टा। सुसरा दिन भर आवारागर्दी करने में रैवे है।''[११]

ऊपर जो दो वक्तव्य दिए गए हैं उनमें ज़ातिगत नफ़रत की भावना साफ झलकती है । देवराम की घरवाली रहमतुल्ला को इसलिए पनाह नहीं देना चाहती कि वह मुसलमान की औलाद है । करीमुल्ला की बेगम इसलिए कि वह डोमिनी की औलाद है । शुद्ध मुसलमानी की औलाद नहीं है ।

दलित-संदर्भ की जो कहानियाँ हैं उनमें दलितों-निम्नवर्ग के लोगों के प्रति साफ नफरत और अपमान का भाव झलकता है । ''नंगा'' कहानी का ठाकुर गुमानसिंह रेवती के साथ शारीरिक संबंध रखता है । उसमें उसे कोई जातिगत ''छोछ'' नहीं है, पर उससे जब रेवती को गर्भ रहता है, तब वह उसे गिरा देना चाहता है, क्योंकि रेवती निम्नजाति की है । निम्न जाति की औरतें ऐश के लिए होती हैं, उनसे उत्पन्न बच्चों को उनका नाम थोड़े मिल सकता है ? ठकुराइन भी बहुत दबाव डालती हैं कि रेवती बच्चे को कोसी

नदी में बहा दे । तब रेवती ठकुराइन को कहना चाहती है- ''गुंसाइनी तुम्हारे ठाकुर ने घर बहुत सोच समझकर लगवाया, मगर जिसे नौ महीने ढोया, उसे इतनी जल्दी गाबड़गो (नदी में बहा देना) देने की ताकत मुझमें नहीं ।''[१२]

''लीक'' कहानी में भी उच्च जाति का अभिमान और निम्न जातियों के प्रति नफरत का भाव दृष्टिगोचर होता है । इस कहानी का नायक कुंडलनाथ ''नाथ'' जाति का है पर इलाहाबाद जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करके प्रोफेसर हो जाता है । डुंगरी गांव के ठाकुर गोपानसिंह की इकलौती-लाड़ली पुत्री कुंडलनाथ के प्रेम में पड़ जाती है और उसी से विवाह करना चाहती है । कुंडलनाथ का ऊँचा स्टेटस देखकर ठाकुर उनकी जातिगत निम्नपना को नजरन्दाज करने को तैयार हो जाते हैं पर कुंडलनाथ के आगे एक शर्त रखते है कि बारात बज्यौली से न आकर अलमोड़े से आवे और बारातियों में कनफड़े नाथ ज्यादा न हों, प्रोफेसर, मास्टर आदि ज्यादा हों और शादी खूब धामधूम और तामझाम के साथ संपन्न हो । लेकिन कुंडलनाथ एक स्वाभिमतानी और खुद्दार युवक था । वह शादी जैसे मौके पर अपनी जाति-बिरादरी के लोगों को छोड़ना नहीं चाहता था और शादी बहुत ही सादगी से करना चाहता था । अतः ठाकुर से वह पूछता है-''पुरखों की धूमधामवाली लीक का पालन करना क्या आप अपने लिए आवश्यक समझते हैं ?'' इसके जवाब में ठाकुर कहते हैं-''आवश्यक ? हाँ, हाँ, इस हालात में तो बहुत जरूरी समझता हूँ । यह मेरे लिए गौरव की चीज हो सकती है ।''[१३]

उक्त संवाद में ठाकुर का यह कहना है कि ''इस हालात में तो और भी जरूरी है ।'' से यह संकेतित होता है ठाकुर की कुंडलनाथ की छोटी जाति से नफरत है । यह चाहता है कि बारात में कनफड़े ज्यादा न हों, उसके पीछे भी वही आशय है ।

''सतजुगिया आदमी'' में हमें इस समस्या का एक और पहलू मिलता है। उसमें नव-जाग्रत शिल्पकार समाज के युवकों को सवर्ण समाज के प्रति

नफरत है,तो सवर्ण ऐसे युवकों को नफरत के भाव से देखते हैं, क्योंकि वे मृत ढोर के शव नहीं ढोते और उनका मांस भी नहीं खाते । यह भी एक विडम्बना है कि ऊँची जाति वालों ने ऐसी समाज-व्यवस्था बना रखी है, जिसमें वे तमाम प्रकार के गन्दे और जघन्य काम उनसे करवाते हैं और फिर उन्हीं आधारों पर उनकी भर्त्सना भी करते हैं । उन्हें नीच और कमीन कहकर गाली देते हैं और अपमानित करते हैं ।

"नेताजी की चुटिया" कहानी में एक छोटी-सी बात कैसे शहर का माहौल खराब कर देती है और कैसे एक कुटिल नेता अपनी वैयक्तिक दुश्मनी निकालने के लिए शहर में हिन्दू-मुस्लिम दंगे करवा देते हैं । नेताजी को एक मुस्लिम हज्जाम से चिढ़ थी । एक दिन जब वे हजामत करवा के आते हैं, अचानक उनका ध्यान अपनी चुटिया पर जाता है और तुरन्त एक शैतानी विचार उनके मस्तिष्क में कौंध जाता है । अपनी चुटिया वे स्वयं काट देते हैं और बात प्रचारित कर देते हैं कि उस मुस्लिम लौंडे ने उनकी चुटिया काट डाली और इस प्रकार उनके धर्म का अपमान किया । इस कहानी में भी हम जातिगत विद्वेष और नफरत के भाव देख सकते हैं ।

३. आवास की समस्या :-

यह समस्या भी गरीबी और दरिद्रता की समस्या से जुड़ी हुई है । मटियानी जी की उन कहानियों में यह समस्या मिलती है जो कहानियाँ मुंबई जैसे महानगरों पर आधारित है । मुंबई में ज्यादातर गरीब लोग नरक से भी बदतर झोंपड़पट्टियों में रहते हैं । कुछ लोग तो फुटपाथ पर अपना जीवन बिताते हैं । कुछ लोग पाईपों में रहते हैं । "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट", "इब्बू मलंग", "दो दुखों का एक सुख", "लाटी", "चील", "महाभोज", "मिट्टी", "गरीबुल्ला", "इल्लेस्वामी" प्रभृति कहानियों में हमें यह समस्या मिलती है ।

"एक कोप चा : दो खारी बिस्किट" में मुंबई की झोंपड़पट्टी तथा

फुटपाथी जिंदगी का कच्चा चिट्ठा लेखक ने यथार्थ ढंग से उकेरा है । उसके पात्र नसीम, रामन्ना,करावा वगैरह या तो गंदी झोंपड़पट्टी में रहते हैं या फुटपाथों या पाईपों में । यहाँ तक कि अपने अपने पेट का खड्डा भरने के लिए एक-एक , दो-दो, रूपयों में शरीर का सौदा करनेवाली लड़कियां कई बार अपने ग्राहकों को प्यार करने के लिए पाईपों में ले जाती हैं, जिसमें उनको पुलिसवाले फोकटियों को भी खुश करना पड़ता है । [१४]

"इब्बूमलंग" कहानी का इब्बूमलंग तो मुंबई में कूड़े के ढेर पर पड़ा रहता है । इस कहानी के अन्य पात्र भी ज्यादातर झोंपड़पट्टी में या फुटपाथों पर रहते हैं । "दो दुःखों का एक सुख" में अल्मोडा शहर का परिवेश है । उसने मृदुला कानी, अन्धा सूरदास तथा करमिया कोढ़ी जैसे भिखारियों की कथा है । ये तीनों के भी रहने की समस्या है । करमिया कोढ़ी ने शहर से कुछ दूरी पर एक पुरानी खण्हरनुमा धरमशाला को ढूँढ़ लिया है । ये तीनों वहाँ रहते हैं । "लाटी" कहानीकी लाटी भी सड़कों और दुकानों के ओटलों पर सोती है । "चील" कहानी के नायक की माँ लोगों के कपड़े-बरतन करके अपना तथा अपने बेटे का पेट पालती है, वह भी एक झोंपड़पट्टी में (इलाहाबाद में) रहती है । "महाभोज" कहानी की शिवरती की भी यही कहानी है । "मिट्टी" कहानी में भी इलाहाबाद का परिवेश है । इस कहानी की नायिका गनेशी अपने दो बच्चों के पालन-पोषण के लिए लालमन नामक एक कोढ़ी की गाड़ी चलाती है और उसके साथ ही फुटपाथों पर सोती है । "गरीबुल्ला" में मुंबई का परिवेश है । कहानी नायक गरीबुल्ला मुंबई के फुटपाथ पर ही जीवन-यापन करता है । "इल्लेस्वामी" कहानी का स्वामी और उसकी बहन यनम्मा बारह-चौदह साल की उम्र तक यतीम थे और बैंगलोर के वैंकटेश्वर के मंदिर के सामने भिखारियों की कतार में बैठे रहते और ऐसे ही एक दिन चिलचिलाती धूप में यमन्ना ने दम तोड़ दिया था । इसके बाद स्वामी वाया घरवाड़ जेल मुंबई आया था और अनेक गुण्डों और दादाओं की मार खाते-खाते स्वयं एक दादा बन गया था और बड़े सेठों के लिए

सुपारी उठाने का काम करता था । लिहाजा उसका भी ज्यादातर वास्ता झोंपड़पट्टी और फुटपाथ वाली जिंदगी से है । [१५]

४. जातिवाद की समस्या :-

मटियानी जी ने अपनी कहानियों में ज्यादातर निम्नवर्ग और निम्नवर्ण के लोगों की जिंदगी को रूपायित किया है । यहाँ जो संदर्भ-त्रयी है-दलित-संदर्भ की कहानियाँ, ईसाई संदर्भ की कहानियाँ तथा मुस्लिम संदर्भ की कहानियाँ- उनमें दलित संदर्भ की कहानियाँ तो सीधे निम्नजाति के लोगों से जुड़ी हुई हैं, जो जातिवादी अपमान-अत्याचार आदि की शिकार हैं । ईसाई परिवेश की कहानियों में जातिवाद की समस्या इस प्रकार संग्रथित हो जाती है कि उसमें हिन्दू से ईसाई होनेवाले लोग प्रायः जातिवादी मिथ्याभिमान के शिकार होते हैं । और मुस्लिम-संदर्भ की कहानियों में जातिवाद की समस्या हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य से संबंधित है ।

जातिवाद की समस्या ऊँची जातियों को तब सताती है जब निम्न-जातियों के लिए आरक्षण का मुद्दा आता है और तब उनका तर्क होता है कि भारत से यदि जातिवाद को दूर करना हो तो सर्वप्रथम जाति-आधारित आरक्षण को दूर करना चाहिए। पर मुद्दा यह है कि क्या जाति-आधारित आरक्षण को हटा देने से जातिवाद का सफाया हो जायेगा ? वस्तुतः सौ बात की एक बात यह है कि ऊँची जातिवाले अपना जातिगत मिथ्याभिमान छोड़ना नहीं चाहते हैं । शताब्दियों से जाति-आधारित श्रेष्ठत्व का ''कोटा'' वे छोड़ना नहीं चाहते । अन्यथा जब उनकी सीटों पर कोई आँच नहीं आनेवाली है, तब ''मैरिट'' के नाम पर यह ''कौआरोर'' क्यों ? यह निम्न-जातियों के प्रति उनके मन में जो मैल है, क्या उसका परिणाम नहीं है ?

इस संदर्भ में श्री प्रेमकुमार मणि का लेख ''अर्जुनों का विद्रोह'' पढ़ जाना चाहिए जो उन्होंने हंस, जून-२००६ में, आरक्षण-विरोधी आंदोलन के खिलाफ लिखा है । उसके थोड़े से अंश को उद्धृत करने के मोह का संवरण

नहीं कर पा रहा हूँ- ''लेकिन प्रबुद्ध जनों से हमारा निवेदन होगा कि इस मसले पर संयत मन से जरा खुलकर विचार करें। सबसे पहले हम यह देखें कि विरोध में उतरने वाले छात्र हैं कौन ? बड़े सुकुमार और काबिल दिखने वाले इन छात्रों में मुझे महाभारत के एक पात्र अर्जुन की छवि दिखती है। अर्जुन श्रेष्ठ धनुर्धर था, महाभारत का पाठ हमें बतलाता है। लेकिन वही पाठ हमें यह भी बतलाता है कि अर्जुन किस तरह श्रेष्ठ बना था। द्रोण द्वारा छल न किया गया होता तो निश्चित ही उस जगह एकलव्य होता। जो आज के सामाजिक व्याकरण के हिसाब से ओ.बी.सी. से आता था। यूँ अर्जुन की टक्कर कर्ण से भी कम नहीं थी, जो सवर्ण घेरे के बाहर का आदमी था, निरादृत तबके का, जिसने अपनी जाति छिपाकर ज्ञान हासिल करने की कोशिश की थी और अन्ततः मारा गया था। तो इस तरह एकलव्यों और कर्णों को छल-प्रपंच से दरकिनार कर अर्जुनों की टोली योग्य बनती रही है। यह हमारी पौराणिकता बतलाती है, महाभारत बतलाता है। और आज अर्जुनों की यह टोली योग्यतावाद का परचम लेकर एक ऐसे अर्जुन (अर्जुन सिंह) के खिलाफ खड़ी है, जिसने योग्यतावाद के भेद को जान लिया है।...एकलव्यों और कर्णों के प्रवेश से मैडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों की शुचिता और श्रेष्ठता नष्ट हो जाएगी। इस दलील में कितना दम है, इसे दलील रखने वालेही तय करें तो ज्यादा अचछा होगा।''[१६]

पौराणिकता ही नहीं इतिहास भी हमें यही बताता है कि हाशिए पर डाले गए लोगों ने बुद्धि और पराक्रम में हमेशा बेहतर प्रदर्शन किया है। इसके लिए हमें ऐशिया और ओलम्पिक के खेलों पर एक नजर डालनी चाहिए। चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, अश्वपति कैकय, जवक, अजातशत्रु, खतित्तया या खेतिहर बुद्ध, कबीर, डा. आंबेडकर आदि पर जरा विचार करके देखें जिन्होंने इतिहास को बदला या गढ़ा है।

इनकी मैरिट की विभावना उनके ही द्वारा गढ़ा गया एक आधुनिक मिथक है। चारों तरफ बस एक ही शोर है- उनके चालीस प्रतिशत वाले

और हमारे अस्सी-नब्बे प्रतिशत वाले !!! अरे, भाई न कोई अभ्यास, न कोई आँकड़े, बस हवा में तीर छोड़े जा रहे हैं। डॉ. पारुकांत देसाई साहब की एक काव्य का यहाँ बरबस स्मरण हो रहा है-

''कई बार माँ के मुँह से सुनी
रामायण-महाभारत की कहानियाँ सत्य प्रतीत होती है !
जैसे अर्जुन या भीष्म के एक बाण से
हजारों बाणों का पैदा हो जाना
तब सोचता था, भला ऐसे कैसे हो सकता हे ?
पर अब वे बातें सच्ची लगती हैं
जब सवर्णों की टोलियाँ, मीडिया और अखबारों द्वारा
एक-एक बात के तीर को लाखों-करोड़ों में तब्दील
कर देते हैं !!!''[१७]

यह सब बातें विस्तार और तफतीस से इसलिए कि हमारे समाज में एक विशिष्ट सुविधाभोगी, सुखी-संपन्न, उच्च-वर्णीय लोगों ने सहस्राधिक वर्षों से धर्म और शास्त्र द्वारा जाति की दीवारें खड़ी करके सिर्फ और सिर्फ नफरत की खेती की है।

''सतजुगिया आदमी'' में सवर्ण समाज का आक्रोश कुमाऊँ के शिल्पकार डोम समाज पर इसलिए है कि गाँव के नव-जाग्रत शिल्पकार युवकों ने तय किया कि हम मरते मर जायेंगे पर जिन कामों के लिए नीच कमीन और म्लेच्छ समझा जाता है वो काम हरगिज नहीं करेंगे। मरे हुए ढोर को खींचने नहीं जाएंगे, मरी हुई भैंस का शिकार (मांस) नहीं खायेंगे। गाँव के तिवारी टोला के पंडित केशवानंद की भैंस मर गयी थी। तिवारी टोला से तीन बार बुलावा आ चुका है पर परराम ने साफ इन्कार कर दिया है कि वह पंडितजी की भैंस को खींचने नहीं जायेगा, क्योंकि वही तो गाँव के सभी युवकों का नेता है। किन्तु परराम का बाप हरराम पंडित केशवानंद के तंत्र-मंत्र और रिद्धि-सिद्धि से आतंकित है। हरराम अपने बेटे को गालियाँ देता है

और उसे धिक्कारता है , क्योंकि वह पंडित जी की सिद्धियों से बुरी तरह से आतंकित है और परराम के लिए चिंतित है । अपने पिता द्वारा धिक्कारे जाने पर परराम को भी गुस्सा आ जाता है और वह अपने बाप पर बरस पड़ता है -

''बौज्यू, कालीनाग तो न पंडित राघवानंद की मुट्ठी में था, न केशव पंडित के आचमन में है । कालीनाग तो असल में तुम जैसे मूरख लोगों की आत्मा और बुद्धि से लिपटा हुआ है और पूरे शिल्पकार खानदान को डंसता हुआ चला जा रहा है । हम डोम लोगों की आत्मा और बुद्धि को एक जहर तो जन्म-जन्मांतरों से लगा हुआ- ऊँची जाति के लोग हमें कुत्तों से भी ज्यादा अछूत मानते आये । म्लेच्छ कहकर दुत्कारते आये । दूसरा कालीनाग तुम जैसे हमारे पुरखों की दुर्बुद्धि का हमें लिपटता रहा । तुमने कहा, जैसे कुत्तों के कबीले में कुत्ते ही पैदा होते हैं, ऐसे हम म्लेच्छों के कबीले में म्लेच्छ ही पैदा होंगे । तुम लोगों का गन्दा खून हम लोगों की नसों में भर गया । कालीनाग तो औरों को डंसता है, मगर हम निर्बुद्धि डोमों की बुद्धि हमको डंसती रही जैसे ही हम सिर उठाकर जीने की कोशिश करते हैं, वैसे ही यह दुर्बुद्धि का नाग हमें डंसने लगता है । मरे भैंस की खाल नहीं खींचने, भैंस का शिकार नहीं खाने से अगर सत्यानाश होता है, तो रायबहादुर किसनराम का सत्यानाश क्यों नही हुआ ?''[१८]

''घुघुतिया त्यौहार'' नामक कहानी में इधर निम्न जातियों को जो कुछ राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुए हैं और उनके रहते उच्च वर्ण के लोगों को जो तकलीफ हो रही है, उनका बड़ा ही कलात्मक आकलन हुआ है । कुमाऊँ प्रदेश में माघ की संक्रान्ति के दिनों में एक त्यौहार आता है जिसमें कौओं को-घुघुतौ को खीर-पूड़ी खिलायी जाती है और तब कौओं का महत्व बढ़ जाता है ।

कहानी का देवराम यूं तो ठाकुर कल्याणसिंह का हलिया है और ठाकुर की एक पुकार पर घरवाली समेत उनकी ड्योढी पर हाजिर हो जाता है, लेकिन आज लक्ष्मी ठकुरानी वाले मामले में पंचायत हो रही थी और

देवराम भी एक पंच था। किस्सा -कोताह यह कि ठाकुर ने अपने सगे भतीजे की कुछ जमीन हड़प ली थी और यह मामला उनकी भतीजा-बहू लक्ष्मी ठकुरानी पंचायत में ले गई थी। ठाकुर कल्याणसिंह को यह गुमान था कि देवराम तो उनकी चिट्ठी का चाकर है ही, इसलिए फैसला उनके पक्ष में ही देगा और इसलिए उसे पंचायत के वक्त से कुछ पहले ही बुलाकर अपनी पट्टी पढ़ा लेना चाहता था और इसलिए सुबह से अब तक में कई-कई बार उसके नाम की टेर लगवा चुके थे। आखिर थक-हार कर स्वयं ठाकुर उसे बुलाने उसके दरवाजे पर पहुँचते हैं, तब घरवाली तो कोई बहाना बताकर बात को संभालने की कोशिश करती है, पर देवराम अपनी बात दो-टूक जबान में कह देता है-"खैर, बहाना करना तो बेकार है, हाँ थोकदार ज्यू। तमाखू की चिलम ही तो गुड़गुड़ा रहा था, कोई जहाज तो नहीं उड़ा रहा था। मगर बात असल में ठहरी कि और दिनों की बात अलग हुई आज की बात अलग।" इस बात पर थोकदार कल्याण ठाकुर व्यंग्य में कहते हैं-"हाँ, हाँ, देवराम आज ज़रूर बात अलग हुई- आज तो तू त्यौहार का कौआ जो ठहरा?"[१९]

"लीक" कहानी में ठाकुर गोपालसिंह के पिता ठाकुर किरपाल सिंह ने अपनी छोटी पुत्री कलावती के लिए सबलसिंह बौर का रिश्ता ठुकरा दिया था, यह कहते हुए कि-"बौर को बेटी देने से, ऊँची जाति के किसी बैठोर गरीब को बेटी देना पंसद करूँगा।"[२०] सबलसिंह बौर धन-दौलत के माले में ठाकुर किरपालसिंह से काफी ऊँचे थे, पर जाति के मामले में थोड़े से नीचे पड़ते थे।

पहले तो यह जातिगत विद्वेष केवल हिन्दुओं तक सीमित था, पर अब मुसलमानों के आगमन के पश्चात् यह जातिगत विद्वेष इन दोनों कौमों के बीच परस्पर पाया जाता है। हिन्दू-मुसलमानों को गालियाँ देते हैं और मुसलमान हिन्दुओं को जिसे हम "रहमतुल्ला" कहानी में लक्षित कर चुके हैं।

५. धर्मान्तरण की समस्या :-

धर्मान्तरण की समस्या अर्थात् एक धर्म से दूसरे धर्म में जाने की प्रक्रिया की समस्या। हमारे यहाँ मुसलमानों के आगमन तक तो पिछड़ी जाति के लोगों के आगे धर्म को लेकर कोई विकल्प ही नहीं था। हाँ, बौद्ध धर्म ने उन लोगों में चेतना की एक लहर पैदा की थी, मगर अपने न्यस्त हितों की रक्षा के लिए बौद्ध-धर्म को यहाँ टिकने नहीं दिया गया और बौद्ध-धर्म का प्रभाव दूर करने के लिए कैसे-कैसे हथकण्डे अपनाए गए उसका बड़ा ही सुंदर निदर्शन डॉ. रामधारीसिंह दिनकर ने अपने ग्रन्थ ''संस्कृति के चार अध्याय'' में किया है।[२१] हिन्दू धर्म बौद्ध धर्म के खिलाफ ताल ठोककर खड़ा हो गया था क्योंकि बौद्ध धर्म ने सर्वप्रथम हिन्दुओं के अमोघ-अस्त्र ''जातिप्रथा'' को चुनौती दी थी। यही वह अस्त्र था जिससे ऊँची जाति के हिन्दू निम्न जाति के हिन्दुओं का शोषण करते थे। बहरहाल बौद्ध धर्म का खतरा तो टल गया पर बाद में आया इस्लाम जिसके कारण भारत की निम्न जातियों के सामने एक नया विकल्प आया। इन सब बातों की यथेष्ट चर्चा हम पूर्ववर्ती अध्यायों में कर चुके हैं। जब मुसलमान आये तब कुछ लोगों ने इस्लाम धर्म को अंगीकृत किया। उसके बाद जब पोर्ट्गिज,फ्रेंच और अंग्रेज आये तो उनके साथ कुछ ईसाई धर्म प्रचारक पादरी भी आये थे। अतः उनके प्रभाव में पुनः कुछ लोगों ने ईसाई धर्म स्वीकार किया। इस प्रकार धर्मान्तरण की प्रक्रिया शुरू हुई।

मटियानी जी की कहानियों में यह धर्मान्तरण की प्रक्रिया दोतरफी मिलती है- एक हिन्दू से मुसलमान होना और दो हिन्दू से ईसाई होना। प्रथम तरह में हमें ''गोपुली गफूरन'', ''रहमतुल्ला'', ''हलाल'', ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट''आदि कहानियाँ मिलती हैं और दूसरी तरह में ''झुरमुट'', ''दीक्षा'', ''चुनाव'' , ''छाक'', ''कोहरा'' जैसी कहानियाँ उपलब्ध होती हैं। यहाँ एक तथ्य की ओर ध्यान गयेबिना नहीं रहता कि धर्मान्तरण की यह प्रक्रिया का रास्ता एकतरफा है, दो तरफा नहीं। कोई

मुसलमान, कोई ईसाई हिन्दू बना हो,ऐसे किस्से संसार में अपवादरूप ही मिलते हैं। परन्तु हिन्दू से मुसलमान और हिन्दू से ईसाई होने के तो कई कई किस्से मिलते हैं। मटियानी जी में तो ऐसा एक भी किस्सा नहीं मिलता है। इसका कारण है। हमारे यहाँ भागा है, घटाने का है, लेकिन गुणा और जोड़ नहीं है। हमारे यहाँ शुद्धता-अशुद्धता,शुचिता-अशुचिता, पवित्रता-अपवित्रता आदि के दकियानूसी ख्याल इतने व्याप्त हैं कि हमारे धर्म का सारा सत्त तो शायद उसकी रक्षा में ही निकला जाता है

यहाँ इस मुद्दे पर मैं अपने निर्देशक महोदय प्रो. देसाई साहब से बिलकुल सहमत हूँ कि मुसलमानी आक्रमण के समय तलवार के बल पर धर्मान्तरण केवल कुछ ऊँची जातियों का हुआ, पर निम्न जाति के लोगों ने मुस्लिम धर्म का स्वीकार स्वेच्छा से किया, क्योंकि यहाँ उनका प्रताड़न और शोषण इतना होता था कि जानवरों और कुत्तों से भी बदतर उनकी स्थिति थी। दक्षिण में तो दलितों की परछाइयों से भी सवर्ण जाति के लोग भ्रष्ट हो जाते थे।

"गोपुली गफूरन" कहानी में हम देखते हैं कि गोपुली का पति जब तक जिन्दा था तब तक हर व्यक्ति गोपुली का उपभोग करना चाहता था। वहाँ पंडित और ब्राह्मण भी मुंह मारने से बाज नहीं आते थे, लेकिन जैसे ही उसके पति की मृत्यु हो गयी, सब लोगों ने किनारा कर लिया और तब अपने दो बच्चों हरराम और परराम की परवरिश के लिए उसे अहमदअली फडवाले के घर बैठना पड़ता है और "गोपुली" से "गफूरन" बनना पड़ता है। आत्मा के स्तर पर गोपुली को बहुत पीड़ा होती है। पर स्त्री -गोपुली महतारी गोपुली के आगे हार मान लेती है।[२२]

"रहमतुल्ला" कहानी में खिमुली जब विधवा हो जाती है, तब फतेउल्ला के साथ निकाह पढ़ लेती है। रहमतुल्ला उनकी संतान है। जब दोनों काल कवलित हो जाते हैं तब खिमुली का भाई उदेराम रहमतुल्ला को अपने घर ले भी आता है। उदेराम बेऔलाद था। इस तरह उसे भांजे के रूप में एक बेटा

मिल जाता है। पर उसकी औरत महा कर्कशा थी। रहमतुल्ला के आने पर वह आसमान उठा लेती है। गंगाराम ससुरजी उदेराम का हुक्का-पानी बन्द करवा देने की धमकी देते हैं और उदेराम की घरवाली भी कह देती है- ''मुसल्टों की औलाद से तो हम निपूते ही अच्छे।''[२३] इस प्रकार हम यहाँ देखते हैं कि एक बार जो व्यक्ति हिन्दू धर्म से बाहर हो गया, वह सदा के लिए गया। भले अपने यहाँ हम इतरावे, पर विश्व के नक्शे में हम कहाँ हैं, उस पर जरा विचार कर लेना चाहिए।

''हलाल'' का खत्तनमियां भी मूलतः निम्न जाति का हिन्दू है, पर बचपन में ही माता-पिता काल कवलित हो गये, तब उस अनाथ बच्चे को आश्रय एक मुसलमान बूचड़ ने ही दिया था। ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'' की नसरीन की माँ भी मूलतः हिन्दू है पर नसीब की मारी पुरुष वंचना का शिकार होकर वह मुंबई पहुँचती है, जहाँ जम्सू दादा उसे बिरयानी और कोफता, खिलाता है। नसरीन जम्सू दादा की औलाद है।[२४]

उक्त सभी कहानियों का यदि समग्रावलोकन करके विश्लेषण करें तो एक ही बात आती है और वह यह कि निम्न जाति की हिन्दू स्त्रियाँ लाचार दर्जी और निराश्रयता में मुस्लिम धर्म को अख्तियार करती है। हमारे यहाँ बहुत से लोग मुसलमानों को मलेच्छ कहते हैं, और निम्न जाति के लोगों की तुलना भी प्रायः म्लेच्छों से करते हैं। ऐसे में ये यदि म्लेच्छ हो जाते हैं तो इसमें कसूर किसका है ?

''झुरमुट'' और ''कोहरा'' को छोड़कर ईसाई संदर्भ की सभी कहानियों में भी हिन्दू स्त्री-पुरुष ईसाई धर्म किसी-न-किसी प्रकार की लाचार दर्जी पर निराश्रयता की स्थिति में ही अंगीकृत करते हैं। ''झुरमुट'' कहानी के पंडित घरणीघर (डी.डी.) उत्प्रेती सुप्रिया मसी के रूपाकर्षण पर मुग्ध होकर अपनी ब्याहता पत्नी तारा पंडितानी को छोड़कर सुप्रिया के कारण ईसाई धर्म स्वीकार करते हैं। ''कोहरा'' कहानी के कादर परांजपे कभी कट्टर हिन्दू थे,परन्तु अपनी क्रिश्चियन प्रेमिका की मृत्यु के उपरांत वे ईसाई

होकर फादर हो जाते हैं। यहाँ एक बात ध्यातव्य है कि क्या कोई विधर्मी यदि हिन्दू हो जाए तो उसे ऐसा उच्च धार्मिक पद हासिल हो सकता है। धरणीधर और परांजपे को छोड़कर धर्मान्तरण के जो दूसरे किस्से मिलते हैं, उनमें उक्त विवेचित कारण ही उपलब्ध होते हैं।

"दीक्षा" कहानी की सावित्री का पति हैजे में मारा जाता है। पति-वियोग से व्यथित सावित्री आत्महत्या करना चाहती थी, पर लोगों द्वारा उसे बचा लिया जाता है। सावित्री को लोग बचा तो लेते हैं पर उसके बाद की उसकी जिम्मेदारी के लिए कोई आगे नहीं आता। अंततः उसे आश्रय मि. गोम्स के यहाँ मिलता है और बपतिस्मा के बाद वह मिसेज गोम्स हो जाती है।

"चुनाव" कहानी का कृष्णानंद पंडित ब्राह्मण है, पुरोहित है, यजमानी करता है, पर उसे कमला, शिल्पकारिन से प्रेम हो जाता है। कुमाऊँ का पहाड़ी गाँव वैसे ही बहुत रूढ़िचुस्त होता है। गाँव वाले एक चमारिन-डोमिन और एक ब्राह्मण की शादी पर अपनी संमति की मुहर कभी लगाते , दूसरी ओर कृष्णानंद और कमला का प्रेम शारीरिक धरातल पर पहुँचता है, जिसके फलस्वरूप कमला गर्भवती हो जाती है। कमला तो कृष्णानंद को निरापद करने के लिए आत्महत्या तक के लिए तैयार हो जाती है, पर कृष्णानंद की आत्मा उसे कचोटती है और वे दोनों शहर भाग जाते हैं। शहर में उनकी मुलाकात पादरी जानसन चौहान से होती है, जिनके प्रभाव में ये दोनों ईसाई धर्म में दीक्षित हो जाते हैं। यहाँ भी धर्म-परिवर्तन के पीछे कारण एक प्रेम-प्रकरण है।

"छाक" कहानी की गीता मास्टरनी असफल प्रेम के कारण ईसाई धर्म की ओर आकृष्ट होती है। वह किशनचन्द्र उप्रेति को चाहती थी। दोनों ने साथ जीने-मरने की कसम खायी थी। पर माँ की बीमारी के कारण किशनचन्द्र को गाँव जाना पड़ा और वहाँ अंतिम सांसे गिन रही माँ की इच्छा पूरी करने के लिए उन्हें उमा से विवाह करना पड़ा। गीता प्रेम-वंचना से आहत होकर

पहले तो किशन को नफरत करने लगी थी,पर वस्तुस्थिति को समझ कर वह किशन को क्षमा कर देती है । उनकी मैत्री आजीवन रहती है । गीता स्कूल में नौकरी कर लेती है और आजीवन अविवाहित रहती है । गीता की बहन ने पहले ही ईसाई धर्म अंगीकृत कर लिया था । अतः गीता भी ईसाई हो जाती है । गीता-किशन की मैत्री के पीछे किशन की पत्नी उमा की उदारता भी कारणभूत है ।

यहाँ हम एक बात लक्षित कर सकते हैं कि मुख्यतः धर्मान्तरण के लिए हिन्दू धर्म में प्रवर्तमान अनुदारता, संकीर्णता और निम्न जातियों के प्रति ऊँची जातियों का अन्यायपूर्ण रवैया है ।

६. वेश्या समस्या :-

मटियानीजी की उक्त संदर्भ-त्रयी की कहानियों में ''नंगा'', ''सावित्री'', ''भंवरे की जात'', ''नीत्शी'', ''इब्बूमलंग'', ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'', ''इल्लेस्वामी'' आदि कहानियों में हमें वेश्या समस्या का आकलन मिलता है । देह का व्यापार संसार का सबसे पुराना व्यवसाय माना जाता है । वैसे गरीबी की समस्या आदि से इसका सीधा संबंध है ।

वेश्या की विभिन्न कोटियों में ''रखैल'' को भी एक कोटि मानी गई है । ''नंगा'' कहानी की रेवती ठाकुर गुमानसिंह की रखैल है । वह शिल्पकारिन है । उसका पति ठाकुर का हलवाहा था । उसे असाध्य बीमारी थी और ठाकुर को मालूम था कि वह इस संसार में बस कुछ महीनों का मेहमान है, अतः ठाकुर एक पूर्व चिंतित योजना के तहत पहले ही हरिराम को उसके पुस्तैनी मकान से अलग करके अपने खेत में एक मकान बनवा कर उसे लाया था । शुरू से ठाकुर की नजर रेवती पर थी । अतः हरिराम के देव होते ही मौका देखकर वह रेवती को अपनी ''रखैल'' बना लेता है ।

''सावित्री'' और ''भंवरे की जात'' ये दो कहानियाँ ''मिरासीनों''

के जीवन पर आधारित हैं। मिरासीनें वैसे प्रकटतः तो गाने-बजाने का काम करती है, किन्तु अच्छा असामी देखकर उसे फांसना और देह-विक्रय का सौदा करना यह भी प्रायः मिरासीने करती है। "भंवरे की जात" कहानी की चिणकुली और कुंतुली और "सावित्री" कहानी में कलावती और सावित्री मां-बेटी हैं। यहाँ वंश लड़कों से नहीं लड़कियों से चलता है।

उक्त दोनों कहानियों में कुंतुली और सावित्री ये दोनों मिरासीनों की आधुनिक पीढ़ी को लेकर आयी है। ये दोनों ने ठाकुरों को फांस रखा है। "भंवरे की जात" कहानी का ठाकुर जब अपनी पत्नी को बुला लाता हे तब कुंतुली के पास नहीं आता है। ऐसे में उसकी मां चिणकुली उसे खूब समझा-बुझाकर ठाकुर के गाँव भेजती है। ठाकुर अपनी पत्नी रुक्मी के साथ उसके मायके के गाँव काफली में रहता था। कुंतुली काफली आती है, पर रुक्मी को मिलने के बाद उसका मन बदल जाता है और वह रुक्मी से कहती है - "मैं तो नाच-गा के भी जिन्दगी की गाड़ी ठेल लूंगी, लेकिन तुम कहाँ तक मायके में पड़ी रहोगी। मैंने अपना दावा छोड़ा।"[२५] वैसे इस कहानी की चिणकुली के संदर्भ में कहानी में ही एक स्थान पर आया है कि चिणकुली जिसे भी पकड़ लेती है उसका हाड़-मांस सब चूस लेती है..."यारों एक होती है कठकिड़ी, वह छोटी-सी कठकिड़ी लकड़ी की बड़ी-बड़ी बल्लियों को कोर-कोर के खोखला कर देती हैं। और यह कुंतुली हुड़क्यानी जो है, वह चमकिड़ी है। चमजूं जैसी जिस अभागे से चिपटती, बस फिर खोक के साथ ही छूटती।"[२६]

"सावित्री" कहानी की सावित्री यों तो मिरासीन है, पर प्रकृति से किसी सती-साध्वी स्त्री से कम नहीं है। वह एक ठाकुर को चाहती है। ठाकुर की पत्नी दिवंगत हो चुकी है और उसका बेटा ससुराल में सास के पास पल रहा है। मेला आनेवाला है। उस मेले में जितना हो सके उतना निचोड़ लेने की सलाह सावित्री की मां कलावती देती है, पर सावित्री है कि ठाकुर को एक भी पैसा फालतू अपने पर खर्चने नहीं देती। सावित्री की मां उसे ठाकुर का

घर उजाड़ने की शिक्षा देती है , पर सावित्री ठाकुर का घर बसाने की बात अपने मन में ठान चुकी है । ठाकुर की फिजुलखर्ची उसे अच्छी नहीं लगती। कहानी के अन्त में वह ठाकुर को कहती है-

"आखिर खर्च करने का भी एक तरीका होता है । तुम तो सौ-सौ के नोट ऐसे निकाल देते हो,जैसे हम लोगों को आगे-पीछे कोई खाने वाला और कोई है ही नहीं ? और हाँ, यह तो मैं तुमसे पूछना ही भूल गई । पहली वाली दीदी का मुन्ना आखिर कबतक ननिहाल में पड़ा रहेगा , दूसरे के भरोसे ? बेचारा माँ की ममता को तरसता होगा वहाँ...मेले से लौटते ही उसको घर वापस ले आना है । अब ये-ए-ए- बन्दरों की तरह क्या देख रहे हो मेरे को ? अब तक तो तुम चार-पाँच बच्चों के बाप बन चुके होते ?...अरे पूरे तीन दिनों तक मेला चलता रहता है, तो क्या यह जरूरी है कि हम भी यहाँ पड़े रहें ? कितना रूपया आलतू-फालतू चीजों में खर्च हो जाता है यहाँ ? उठो, वापस चलने की तैयारी करो । मैं तुम्हारे कपड़े तह करती हूँ । गिरस्ती ऐसी घर फूंक तमाशा देखने की चीज नहीं ।"[२७]

यही कहानी अन्यत्र 'गृहस्थी' नाम से भी संकलित है । यहाँ सावित्री एक मिरासीन होते हुए भी एक गृहस्थिन होने का सपना संजो रही है । मिरासीन होते हुए भी उसमें उस तरह के कुसंस्कार नहीं है, बल्कि वह एक सती-साध्वी स्त्री-सा व्यवहार करती है । यहाँ एक पुरानी रूपक कथा स्मृति में कौंध रही है । एक सेठानी और एक वेश्या एक ही मुहल्ले में रहती थी । सेठानी तुलसी-क्यारे पर पानी डालती, शाम को वहाँ दीप जलाती, वेश्या अपने घर की मुंडेर से वह सब देखती और सेठानी के भाग्य को मन ही मन सराहती और उस प्रकार के जीवन की कामना करती है । दूसरी ओर सेठानी प्रकटतः वेश्या को गालियाँ देती रहती, पर उसके यहाँ जाने वाले मनचलों को हसरत भरी निगाहों से देखती रहती । संयोगवशात दोनों की मृत्यु साथ-साथ हुई और वे दोनों साथ-साथ ऊपर गयी । वहाँ वेश्या के लिए स्वर्ग का दरवाजा खुला और सेठानी के लिए नरक का । सेठानी ने चित्रगुप्त के कर्मचारी

से पूछा कि कोई गलती हो गई है । तब उसने कहा कि सेठानी जी कोई गलती नहीं हुई है । वह वेश्या तन से अपवित्र होते हुए भी मन और आत्मा से पवित्र थी और आप शरीर से पवित्र होते हुए भी मन से अपवित्र रही, इसलिए ऐसा हुआ । यहाँ हम कहना यह चाहते हैं कि सावित्री मिरासीन होते हुए भी एक सच्ची गृहस्थिन नारी है । अन्यथा मिरासीनों की गिनती समाज में वेश्याओं के रूप में ही होती है ।

''नीत्शी'' कहानी की नीत्शी वेश्या तो नहीं है, पर कहानी में जो संकेत प्राप्त होते हैं उनके अनुसार उसकी उस प्रकार की परिणति होगी ऐसा कह सकते हैं । ''इब्बूमलंग'' में इबादत हुसैन एक वेश्या के पास जाता है । बाद में उसे पता चलता है कि वह वेश्या उसकी चचाजाद बहन सइदन है । सइदन बाद में सिफलिस की बीमारी से गुजर जाती है । इसी कहानी में सुलतानी भंगिन का पात्र भी आता है,उसे हम प्रच्छन्न प्रकार की वेश्या कह सकते है; क्योंकि वह मुंबई के नबीपाडे के दादा नागप्पा से लेकर कई लोगों के साथ सो चुकी है । ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'' में मुंबई की झोपडपट्टी के लोगों का जीवन चित्रित है । अतः उसमें नसीम, करावा जैसी वेश्याएँ होती हैं जो अपना तथा अपने भाई-बहनों का पेट पालने के लिए दो-दो, चार-चार रूपये में जिस्मफरोशी करती हैं । नसीम की माँ यू.पी. के बस्ती जिले से मुंबई में आयी थी । कुछ बनने पर अन्ततः पुरुष-वंचना का शिकार होकर एक सामान्य वेश्या बनकर रह जाती है । यह वेश्यागिरी नसीम को विरासत में मिली है । कहानी में रामन्ना की बहिन करावा का जिक्र भी आया है । वह अपने भाई रामन्ना से ''छूपमा'' अपना तथा भाई का पेट पालने के लिए वेश्या वृत्ति करती है और इस बात के प्रकट हो जाने पर रेल से कटकर आत्महत्या कर लेती है । ''इल्लेस्वामी'' कहानी की आयशाबाई भी एक वेश्या है । यही आयशाबाई स्वामी को सच्ची मुहब्बत और हविश का अंतर समझाती है--''नहीं स्वामी ? तुमसे नफरत क्यों करूँगी ? इन पाँच वर्षों में जितना पैसा तुमसे पाया है, किसी और से नहीं । मगर पैसा और हविश एक

चीज है, मुहब्बत दूसरी।''[२८] आयशाबाई स्वामी को समझाती है कि मुहब्बत कभी पैसे से नहीं की जाती। मुहब्बत खरीदी नहीं जा सकती। ''प्रेम न बाड़ी उपजै, प्रेम न हाथ बिकाय'' वाली बात एक सामान्य-सी दिखने वाली आयशाबाई स्वामी को समझाने में सफल ही नहीं होती,उसकी काया-पलट भी कर देती है।

इन सब कहानियों से एक बात निष्कर्षित होती है कि वेश्या जो जिस्मफरोशी का ''धंधा'' करती है, उसकी भी अपनी एक नैतिकता होती है , उसकी भी अपनी एक व्यवहार संहिता होता है। वैसे कोई भी लड़की जनम से वेश्या नहीं होती , वेश्या को वेश्या बनानेवाली स्थितियाँ हमारे समाज में ही मौजूद है।

७. बीमारियों की समस्या :-

यह समस्या भी गरीबी और दरिद्रता से जुड़ी हुई है। बीमारियाँ गन्दगी से फैलती है और गरीबी और गन्दगी का, गरीबी और बीमारी का चोली-दामन का साथ है। हमारी झोपडपट्टियाँ गन्दगी का आगार हैं। वहाँ बीमारियाँ न हो तो ही आश्चर्य होगा। मटियानी जी ने जिस परिवेश को उठाया है, उसमें पग-पग पर दरिद्रता और गरीबी है। इसलिए उनकी कहानियों में यह समस्या विशेष रूप से हमें दृष्टिगत होती है। संदर्भ-त्रयी की कहानियों में ''दीक्षा'', ''इब्बूमलंग'', ''नंगा'',''प्रेत-मुक्ति'', ''लाटी'', ''चील'', ''महाभोज'', ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट''आदि कहानियों में हमें इस समस्या के परिणामों के संदर्भ मिलते हैं।

''दीक्षा'' कहानी की नायिका सावित्री नामक एक दलित स्त्री है। उसका पति हैजे में मारा गया है। ''इब्बूमलंग'' कहानी की सुंदरीबाई उर्फ सइदन नामक वेश्या सिफिलस की बीमारी से दम तोड़ देती है। सइदन से यह बीमारी इब्बूमलंग को भी होती है, पर उस दिन से वह किसी वेश्या के यहाँ नहीं जाता, बल्कि एक हकीम उसे किसी गधिया के साथ संभोग करने की सलाह

देते हैं, तब भी वह साफ नकार जाता है । सेक्स-जन्य बीमारियों को सामान्य भाषा में गुप्त-रोग कहते हैं । आजकल "एइड्स" नामक एक बीमारी फैली है, वह भी ज्यादातर वेश्यागमन से होती है। "नंगा" कहानी की रेवती का पति तपेदिक का शिकार है । उन दिनों में तपेदिक जानलेवा असाध्य बीमारी समझी जाती थी । तनतोड़ मेहनत, पोषण युक्त खोराक का अभाव, तमाकू आदि का व्यसन इसके लिए कारणभूत माने जाते हैं । "प्रेत-मुक्ति" कहानी में कुछ मानसिक बीमारियों की, पर गाँव के लोग जिन्हें "भूत-प्रेत" लगना कहते हैं, जिक्र मिलता है । "लाटी" कहानी में लाटी जिसे प्रेम करती है वह भिखारी भी बीमारी की चपेट में मर जाता है । "लीक" कहानी की सतनारायणी तथा उसका पति भी बीमारी के कारण असमय मृत्यु के ग्रास हो जाते हैं । "महाभोज" की शिवरति का पति भी कई-कई दिनों से बीमार चल रहा है । इनके अतिरिक्त कोढ़ इत्यादि चर्मरोग भी मिलते हैं । "मिट्टी" कहानी का भिखारी लालमन कोढ़ी है । "दो दुःखों का एक सुख" में करमिया भिखारी एक कोढ़ी है ।

८. ज्यादा संतानों की समस्या :-

यह समस्या भी गरीबी की समस्या और अतएव दलितों और मुस्लिमों से जुड़ी हुई है । यह प्रायः देखा गया है कि जो लोग धनवान होते हैं,उनके यहाँ संतानों का नितान्त अभाव होता है । यह बात आदि-अनादि काल से चली आ रही है ।

अंग्रेजी में एक कहावत है - There is always room at the top अर्थात् ऊपर हमेशा खाली जगह होती है, भीड़-भाड़ सब नीचे होती है । बात तो वह दूसरे संदर्भ में कही गई है, पर बच्चों के संदर्भ में भी यह खरी उतरती है । ऊपर, अर्थात् धनवानों के यहाँ हमेशा बच्चों का अभाव होता है । नीचे गरीबों के यहाँ तो बच्चों की भरमार लगी हुई रहती है । अतः संतानों के अधिकार की यह समस्या हमें चर्चित कहानियों में से "रहमतुल्ला",

''पत्थर'', ''इब्बूमलंग'', ''चील'', ''मिट्टी'', ''महाभोज'' आदि कहानियों में दृष्टिगत होती है। ''रहमतुल्ला'' कहानी की गुलशन बेगम अपने जेठ के बच्चे को ''रहमतुल्ला'' को इसलिए नहीं रखना चाहती कि उनके अपने लगभग पौने दर्जन बच्चे हैं जिनके खाने का तो ठिकाना है नहीं, उसमें इस नयी बला को वे कैसे रख सकते हैं। ''पत्थर'' कहानी में भी मुस्लिम परिवेश है। उसमें रमजानी जिन अहमदिया आदि की बात करता है उन सबके यहाँ तीन-तीन, चार-चार बच्चे हैं, जिनके पालन-पोषण के लिए इन्हें रात-दिन खपना पड़ता है। ''इब्बूमलंग'' कहानी में सुलतानी भंगिन तथा शकुंतला पाटन के कई-कई बच्चे हैं। शकुंतला के तीन-चार बच्चे हैं, और दूसरा अभी आनेवाला है। उसके पति की एक हादसे में मौत हो गई है। अतः लोगों के यहाँ कपड़े-बरतन, हांडी-बरतन वगैरह करके वह किसी तरह इन पिल्लों को पालती है। आगे काम नहीं कर सकेगी यह सोचकर वह कुछ रकम जमा करती है, पर इब्बूमलंग के दिए आंकड़े के चक्कर में सारी रकम गँवा चुकती है, तब वह ''इब्बूमलंग'' को माँ-बहन की गालियाँ देती है।[२९] उसकी मुख्य चिंता यह है कि अब इन बच्चों को वह क्या खिलाएगी-पिलाएगी? ''चील'' कहानी में सतनारायणी के तो एक बच्चा है, पर उसके साथ जो दूसरी कामवालियाँ हैं और वह जहाँ रहती हैं गरीबों की बस्ती में सभी के कई-कई बच्चे हैं और उन सबके सामने उनके लालन-पालन की समस्या है। उनकी शिक्षा-दीक्षा की बात तो दूर की बात है। ''मिट्टी'' कहानी की गनेशी एक कोढ़ी भिखारी की गाड़ी ढोती है। उसके दो बच्चे हैं। वे भी गणेशी के साथ-साथ घूमते रहते हैं। ''महाभोज'' कहानी की शिवरती का पति कई महीनों से बेकार है। उसके पाँच बच्चे हैं और छट्ठा अभी आनेवाला है। घर में दारूण गरीबी का आलम है। पति बेकार और बीमार, ससुर की लंबी बीमारी, पर शिवरती एक जुझारू औरत है और मेहनत-मजदूरी करके उन सबका पेट भरती है।

इन लोगों के यहाँ ज्यादा बच्चे होने का एक कारण है कि वे जिस

परिवेश में रहते हैं, उसमें सेक्स के अतिरिक्त उनके पास मनोरंजन का कोई दूसरा साधन नहीं होता। दूसरे ये लोग खूब मेहनती होते हैं। रात-दिन खूब चलते रहते हैं और यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि इन लोगों में संतानोत्पत्ति के हार्मोन्स ज्यादा पैदा होते हैं।

९. निम्न जातियों के लोगों के यौन-शोषण की समस्या :-

यह भी परापूर्व से चलता आया है कि उच्चवर्ण के लोग निम्नवर्ण के लोगों की स्त्रियों का यौन-शोषण करते रहे हैं। बल्कि यों कहना चाहिए कि वे उसे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते आये हैं। मटियानी जी की कहानियों में भी इस तथ्य को हम लक्षित कर सकते हैं। आलोच्य कहानियों में ''नंगा'', ''लाटी'', ''गोपुली गफूरन'', ''दैट माय फादर वेलजी'', ''मिट्टी'' आदि कहानियों में हम न्मिन वर्ण की स्त्रियों के यौन-शोषण की बात को रेखांकित कर सकते हैं।

''नंगा'' कहानी का गुमानसिंह ठाकुर रेवती शिल्पकारिन (डोमिन) को अपनी ''रखैल'' बना देता है। रेवती का पति हरराम ठाकुर का हलिया था और उसे तपेदिक की बीमारी थी और ठाकुर को यह बात ज्ञात थी कि हरराम कुछ दिनों का मेहमान है, फलतः वह योजनाबद्ध तरीके से हरराम के लिए अपनी जमीन में छाता बनवा देता है। हरराम की मृत्यु के बाद रेवती अपनी बाखली में पुनः लौट जाना चाहती है, पर ठाकुर आग्रहपूर्वक उसे रोक लेता है। शुरू से ही रेवती पर ठाकुर की नजर थी, क्योंकि रेवती का साँवला-सलोना गठीला बदन ठाकुर को भा गया था। ठाकुर रेवती को समझाता है -''कौन-सा घर ऐसा होता है, जिसमें कोई मरता नहीं ? और कौन-सी ऐसी औरत है जो विधवा नहीं होती ? मरने से ही घर छोड़ दे, रेवती तो आज सारे लोग जंगलों में रहते। फिर तेरा पुश्तैनी मकान तो अब टूटने लग गया है।''[३०] ठाकुर चाहता तो उस पुश्तैनी मकान को भी ठीक करवा सकता था, पर भला वह ऐसा क्यों चाहता ? उसे तो रेवती को जो

चखना था। ठाकुर का आना-जाना लगा रहता है। अनाज़, कपड़े-लत्ते वगैरह रेवती की सभी जरूरतें पूरी होने लगी थी। रेवती रात-दिन ठाकुर के खेतों में काम करती थी। वह अब स्वयं को मालकिन समझने लगी थीं। ठाकुर को भी यह सौदा बड़ा सस्ता लग रहा था। लेकिन ठाकुर केवल रेवती को भोगना चाहता था। वह यह कतई नहीं चाहता था, कि रेवती से उसे कोई संतान हो। वह रेवती को ब्याहता का दरजा नहीं देना चाहता था। फलतः जब उसे ठाकुर का गर्भ रह जाता है, तब वह उसे गिरा देने की सलाह देता है। उसके लिए दवाई भी खिलाता है पर अवांछित गर्भ जरा मुश्किल से ही गिरता है। अतः गर्भ गिरता नहीं, ठहर जाता है। तब ठाकुर और रेवती सोचती है कि उसका गाबड़गो[३१] कर देंगे। पर बच्चा जब पैदा होता है तब रेवती का ममत्व जाग्रत होता है और वह उसे मारना नहीं चाहती। ठाकुर, ठकुराइन दोनों रेवती पर बहुत दबाव डालते हैं पर रेवती उसे कोसी में नहीं बहाती, बल्कि उसके अधिकार के लिए पंचायत करती है। अपने रसूल के कारण ठाकुर एक को छोड़ कर सभी पंचों को अपने वश में कर लेता है तब रेवती के भीतर की शिल्पकारिन जाग्रत हो जाती है और वह ठाकुर को आह्वान देते हुए उसके खेतों तथा छाते से निकल जाती है।

"लाटी" कहानी की लाटी एक पगली भिखारिन है। उसके पागलपन का लाभ उठाकर बनारसी बुकसेलर एक बार उसको पकड़ लेता है और उसके साथ संभोग करता है। "लाटी" गूंगी भी है, इसलिए वह किसी को इस बारे में बता भी नहीं सकती, शिकायत भी नहीं कर सकती। "गोपुली गफूरन" कहानी में गोपुली एक शिल्पकारिन है। उसका पति देवराम ठठेरा है और तांबे के कलश बनाता है। गोपुली को कोई बहुत सुन्दर तो नहीं कह सकता, लेकिन उसके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा है कि पूरा अलमोड़ा बाजार उसके रूप पर पागल है। बाजार के सभी व्यापारी उसके साथ छेड़खानी करते रहते हैं। शुरू-शुरू में तो गोपुली को यह सब अच्छा नहीं लगता था, पर बाद में उसे भी इन सबका नशा-सा हो जाता है और किसी दिन कोई उसे

छेड़ता नहीं या उसे देखकर कोई 'कामेण्ट्स' नहीं करता तो उसे खाना हजम नहीं होता । किरपाल गुरू पुरोहित उसे प्रायः ऋषि पराशर और सत्यवती की कथा सुनाते रहते हैं और मौका मिलने पर उसके उरोजों पर हाथ भी फेर लिया करते हैं । गोपुली गुरू को इतनी छूट देती है, क्योंकि उन्हीं की बदौलत देवराम के तांबे के कलश बहुत बिकते हैं, क्योंकि गुरू अपने सभी जजमानों को ताकीद करते हैं कि वे पूजा के कलश देवदास से ही खरीदे । खीमसिंह होटलवाला उसे शिकार का भटुआ खिलाता था । वह उसे "गजगामिनी, मिरगलोचनी, चन्द्रमुखी, मनमोहनी [32] कहता है । कभी-कभी मजाक में वह "गजगामिनी" के स्थान पर "गजगामिनी" कहता था । उस पर किरपालदत्त गुरू उसे टोकते कि ठाकुर 'गजगामिनी' होता है, 'गजगामिनी' नहीं । तब जबाव में खीमसिंह कहता कि "ऐसी मस्त तिरिया को गज के अलावा और गाभन भी कौन बना सकता है ?"[33]

संक्षेप में गोपुली के साथ शाब्दिक मैथुन सभी करते हैं, क्योंकि वह शिल्पकारिन है, छोटी जाति की है । उसके स्थान पर कोई पंडिताइन या ठकुराइन होती तो कोई ऐसी हिम्मत नहीं कर सकता था ।

"दैट माय फादर वेलजी" के वेलजी सेठ सुरा-सुंदरी के शौकीन है । कथा नायक पागल की माँ गंगाबाई एक मराठी घाटन है । वह महाराष्ट्र के समतारा जिले के धिंगारी गाँव की रहनेवाली है । मुंबई स्ट्रोक-एक्सचेइन्ज के बिल्डिंग के नीचे वह मोसंबी-संतरे आदि बेचा करती थी । उस समय वह बहुत सुंदर थी और उसकी जवानी बुलंदियों को छूती थी । उसे देखकर लोगों को भ्रम हो जाता था कि वह फिल्म एक्ट्रेस शान्ता आप्टे की बहन होगी । सुंदरियों के शौकीन सेठ वालजी की नजर उस पर भला कैसे नहीं पड़ती । वेलजी सेठ उसे वहाँ से उठाकर एपोलो स्ट्रीट की सातवीं मंजिल पर बिछा देते हैं । वहीं पर कथा-नायक का जन्म होता है । गंगाबाई भी वालजी सेठ की और रखैलों की तरह रहती तो शायद उसका बुरा अंजाम न होता,लेकिन गंगाबाई तो "नंगा" कहानी की रेवती की भाँति स्वयं को

ब्याहता ही समझती है और बारंबार सेठ से अपने बेटे के हक के लिए बात करती रहती है । फलतः सेठ अपनी इकसठवीं सालगिरह पर गंगाबाई को आमंत्रित करके कुछ ऐसा करते हैं कि लड़का पागल हो जाता है और गंगाबाई भी पागल होकर मुंबई के फ्लोरा-फाउण्टन के पास भीख मांगने लगती है । कहानी में इस बात के कई प्रमाण है कि वेलजी सेठ गरीब लाचार-सुंदर स्त्रियों को फंसाकर उनका यौन-शोषण करता है ।

"मिट्टी" कहानी की गनेशी कोढ़ी भिखारी लाल-मन की गाड़ी ढोती है । पर इसको इस अवस्था पर पुरुष-प्रेम-वंचना ने पहुँचाया है । जो भी उसके जीवन में आता है उसका यौन-शोषण करके उसे और भी गहरे गड़हे में धकेलता जाता है । "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट" कहानी में नारी के यौन-शोषण के कई उदाहरण मिलते हैं । वस्तुतः इस कहानी में मुंबई की सस्ती वेश्याओं के जीवन को उकेरा गया है , पर जिस तरह कोई आतंकवादी या अपराधी जन्म से नहीं होता,उसे हमारी समाज-व्यवस्था बनाती है; ठीक उसी तरह कोई भी लड़की जन्म से वेश्या नहीं होती है उसका यौन-शोषण ही उसे इस राह पर ला पटकता है ।

१०. हैसियत से ज्यादा खर्च करने की समस्या :-

हमारे निम्न-मध्यवर्ग और मध्यवर्ग में झूठा दिखावा करने की एक आदत-सी पाई जाती है और फलतः वे अपनी हैसियत से भी ज्यादा खर्च करते हैं और इस तरह ऋण और कर्ज के बोझ तथा गरीबी की गर्त में , उसके दलदल में और भी फंसते जाते हैं । दिखावा और झूठी शान, "गाल पर तमाचा मारकर उसे लाल रखने की" प्रवृत्ति मध्यवर्ग का एक अभिलक्षण बनती जा रही है । प्रेमचन्द ने "गबन" उपन्यास में उसका भलीभांति चित्रण किया है । डॉ. मन्मथनाथ गुप्त के अनुसार भारतीय मध्यवर्ग का इतना बढ़िया, वस्तुवादी और यथार्थ चित्रण "गबन" से पहले और किसी हिन्दी उपन्यास में नहीं हुआ है ।[३४] मटियानीजी भी प्रेमचंद परंपरा के ही लेखक हैं, अतः

उनके उपन्यासों और कहानियों में हमें यह मध्यवर्गीय समस्या मिलती है। मुस्लिम समाज में भी यह प्रवृत्ति बहुतायत से पायी जाती है। जमींदारी और नवाबी चली गई है पर बहुत-मुसलमान अभी भी उस भ्रमणा से बाहर नहीं हो पाये हैं। इसका बढ़िया उदाहरण हमें ''मैमूद'' कहानी में मिलता है।

''मैमूद'' कहानी इलाहाबाद के खुल्हाबाद के मुस्लिम-समाज की कहानी है। जददनबी और अशरफमियाँ का परिवार बहुत ही तंगदस्ती में चल रहा है। रायबरेली से लड़के के लिए कोई रिश्ता आया है। वे लोग घर-वर वगैरह देखने के लिए आनेवाले हैं। घर की माली हालत बहुत ही खराब है। लिहाजा जद्दनबी का बकरा जिसे जद्दनबी अपने बेटे से ज्यादा प्यार करती हैं, उसे हलाल करने की बात आती है। इस संदर्भ में अशरफमियाँ का निम्न कथन उद्धरणीय रहेगा- ''खाने पर बैठे, तो अशरफ बोले, ''शराफत की अम्मा रायबरेली वालों का संदेशा आया है या तुम्हें मालूम ही होगा। हम लोग तो तंगदस्ती में चल रहे हैं, मगर मेहमानों के सामने तो अपना रोना रोया नहीं जाता। इज्जत देखनी पड़ती है। शराफत और जहीर से बात हुई थी। लड़के ठीक ही कह रहे थे कि अब्बा, बाजार में दस रूपये किलो का भाव है। पांच-छै जने शहनाज के पीहर से रहेंगे और भले-बुरे दस-पाँच अपनी आपसदारी के लोगों को बुलाना जरूरी हो जाता है। दूसरों की दावत खाते हैं, तो अपनी शर्म रखनी ही पड़ेगी। शराफत तो यही कहता था कि अम्मा से पूछ के देख लें। तुम्हारे बकरे को कटवा लेते तो घर की चीज घर में काम आ जाती। बाजार में तो चालीस-पचास से कम की ठुकेगी नहीं। खाली रोगनजोश उबाल देने से तो काम चलेगा नहीं। कबाब और कोफ्ते बड़ी बहुत अच्छे बनाती है। पिछले बरस जब हम लोग रायबरेली गए थे, शहनाज के अब्बा ने दो तो बकरे ही कटवा दिये थे और मुर्गियों की गिनती कौन करे। चार-पांच दिन कुल जमा रहे होंगे, गोश्त खा-खाकर अफारा आ गया। गरीब हम लोग उनके मुकाबले में जरूर हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि अपनी कमनियती का सबूत भी दें।''[३५]

उपर्युक्त कथन से साफ जाहिर है कि मेहमानों की आवभगत के लिए बकरा कटवाने की उनकी हैसियत नहीं है, पर दिखावे के लिए यह जरूरी हो गया है । उसमें एक कारण यह भी बताया गया है कि दूसरों के यहाँ खा आए हैं तो अब उनको भी खिलाना पड़ेगा ।

"महाभोज" कहानी की शिवरती का ससुर गुजर गया है । उन लोगों की बिरादरी में मिट्टी उठे बाद सभी स्मशान-यात्रियों को खिलाने-पिलाने का रिवाज है । चेतीराम रोनी-सी सूरत लेकर शिवरती को कहता है-"शिवरत्ती, मैं तेरा गुनहगार हूँ । मुझ सुसरे से घर-गिरस्ती को पाया नहीं दिया गया ।...मेरी एक बिनती सुन ले । अपने को ज्यादा फजीहत में मती डालना । तेरे दिए रूपयों में से साढ़े चार ये ले । बस,गुड़ की डली बंटवाकर बिदा कर देना ।"[३६] इस पर शिवरत्ती कहती है -"मोती के बाबू, बाप के मरे का रोना सभी मरदों को शोभा देता हैगा, तुम्हारा यह जोरू के आगे का रोना मुझसे बर्दाश्त न होगा । अरे बेवकूफ, मैं कोई किसी राह चलते की बेसवा हूँ ? या तुम्हारी घरवाली ? जिस बहुरिया से अपनी घर-गिरस्ती ही न सधी, उसका तो मीरगंज में जा बैठना भला ।...मोती के बाबू, अपने पेट का रोना तो जिनगी-भर का लगा, हैगा, मगर बाप तो रोज नहीं मरेगा ना ? जिस औरत के जीते जी उसके मरद की नाक जाती रहे, उसका तो बावड़ी में डूब मरना भला । तुम कोई फिकर मती करो । जरा हजूरे से दो रूपये की दो-दो पैसे, तीन-तीन पैसे वाली चिल्लर बाजार से मंगवा लो । मिट्टी उठेगी तो बिखेरनी होगी ।"[३७]

शिवरत्ती पचास तोले चांदी की करघनी बेचकर अपने ससुर का सारा कारज निबटाती है । ससुर के पीछे लोगों को जिमाना चेतीराम के हैसियत के बाहर की बात थी, पर शिवरत्ती अपने पति की इज्जत-आबरू के लिए अपनी करघनी बेचकर यह सब करती है । उसने "इतना संतोष जरूर अनुभव किया कि चलो चौबीस घण्टे कमर पर रहनेवाली करघनी गई, मगर पितरों का ऋण निबट गया ।"[३८]

११. निम्न जातियों के अपमान की समस्या :-

हमारे समाज में यह सदा से होता आया है कि उच्च वर्ग के लोग निम्न समझी जानेवाली जातियों का निरंतर अपमान करती हैं। यह अपमान कभी प्रत्यक्ष और प्रकट होता है,तो कभी परोक्ष और प्रच्छन्न। ऐसा प्रतीत होता है कि ऊँची जातिवालों को जब तक किसी नीची जातिवाले का अपमान न कर लें , उसे एकाध चुभती हुई जली-कटी बात न सुना लें,उनको खाना हजम नहीं होता है। यह बात हमें दलित-संदर्भ की कहानियों में विशेष रूप से मिलती है।

''घुघुतिया त्यौहार'' में ठाकुर अपने हलवाहा देवराम को ''घुघुतिया त्यौहार'' का कौआ कहकर प्रकारान्तर से उसका अपमान करता है। प्रस्तुत कहानी का देवराम कुछ जागरूक और चेतना-संपन्न व्यक्ति है। आजकल उसकी आँखों में एक और सपना तैरने लग गया था। अगर उसका बेटा चेतराम हाईस्कूल भी पास कर ले और कभी पटवारी-पेशकार बनकर इस पट्टी में आ जाए, तो उसका सिर औरों से हाथ-भर ऊँचा हो जाएगा। आज तो ठाकुर-ब्राह्मण उसे डुमड़ा-डुमड़ा कहते हैं, कल वही नमस्कार करने लग जायेंगे। जब-जब उनकी गरज पड़ेगी, चेतराम को ''पटवारीज्यू-पेशकारज्यू'' कहते फिरेंगे। देवराम की अवमानित आत्मा उसे कचोटती और वह चाहता कि उसकी जात-बिरादरी के लोग भी इस चाकर-परंपरा से मुक्ति पाएँ। वह अक्सर अपने बिरादरों से कहता भी फिरता-''यारों एक जानवर तो होते हैं घास खानेवाले,मगर अन्न खानेवाले जानवर हमीं लोग ठहरे। अगर शिक्षा नहीं हुई, सिर ऊँचा करके चलने का अभिमान नहीं हुआ, तो जात-बिरादरी को आगे बढ़ाने की कामना नहीं हुई, तो घास और अन्न में फर्क ही क्या हुआ ?''[३९]

''लीक'' कहानी के ठाकुर की लड़की प्रोफेसर कुंडलनाथ को चाहने लगती है। कुंडलनाथ कनफड़ा नाथ है। कुमाऊँ प्रदेश में उनकी गणना नीच-कमीनों में होती है। ठाकुर जब कुंडलनाथ को यह कहते हैं कि बारात

उनके गाँव से न आकर अल्मोड़ा से आवे और उसमें कनफड़े ज्यादा न हों, मास्टर प्रोफेसर वगैरह ज्यादा हों, तो उनके इस कथन में अपमान की भावना साफ झलक रही है। इस प्रकार लगभग सभी कहानियों में उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों का अपमान करते हुए पाए जाते हैं।

१२. अंध-विश्वासों की समस्या :-

जहाँ गरीबी और दरिद्रता होती है, वहाँ अशिक्षा भी होती है और जहाँ अशिक्षा होती है , वहाँ अंध-विश्वास का साम्राज्य अपना अड्डा जमाता है। "सतजुगिया आदमी" का हरराम पुराने विचारों का है, अनपढ़ और अशिक्षित है। उसका बेटा परराम आजादी की इस नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि है और अपने समाज में जागृति और प्रगति लाना चाहता है, फलतः उसने अपने गाँव में युवक-मंडल बनाया है और उन लोगों ने तय किया है कि मरते-मर जायेंगे पर जिन कामों को लेकर उन्हें नीच और कमीन समझा जाता है, वे काम वे लोग हरगिज नहीं करेंगे। मसलन मृत ढोर को खींचने नहीं जायेंगे और उसका मांस नहीं खायेंगे। परन्तु हरराम पुरानी पीढ़ी का है। वह अपने बेटे के विचारों से आतंकित है,क्योंकि वह सोचता है कि पंडित केशवानंद कुपित होकर उसका अहित कर सकते हैं। पं. केशवानंद की भैंस मर गयी है, कई बार बुलावा आ चुका है पर परराम ने सबको कह दिया है, अतः कोई भी मरी हुई भैंस खींचने नहीं जाता। परराम जीतराम लुहार के बेटे बचेराम की बैठक में बैठा हुआ है। वहाँ पहुँचकर वह परराम पर दहाड़ते हुए कहता है- "अरे, ओ परराम ! अपनी महतारी का मुश्यार। जरा बाहर निकल तो। क्यों रे अधर्मी ? नहीं मानेगा तू मेरी बात ? आ गया क्या तेरा भी सत्यानाश का बखत ? तेरी बुद्धि विपरीत हो गयी, जो म्लेच्छ होकर बर्मज्ञानी लोगों से बैर साध रहा ? डंस लेगा कालीनाग तुझे, कपूत उपज गया साला मेरे खानदान में। अपने पुरखों की नाक काटने पर अड़ गया कमीना ! मंतर मार देंगे मूठ में आचमन का जल भरके, तो कालीनाग...जिन लोगों का इस नौखंड धरती

पर राज चल रहा, वो इंगरेज साहब लोग तक जिनको अपनी टोप झुका रहे, उन महाज्ञानियों से टक्कर लेगा तू ? ''[४०]

यहाँ हरराम पंडित केशवानंद के तंत्र-मंत्रों और रिद्धि-सिद्धियों से बुरी तरह से आतंकित है । उसने ये सब अपने पुरखों से सुन रखा है । दूसरे ये पंडित-ब्राह्मण लोग इस प्रकारका धार्मिक-आतंक फैलाकर निम्न जाति के लोगों को अपने वश में करते रहे हैं । ज्वार में कोई ऐसी घटना हो गई हो, तो उनका प्रचार-तंत्र उसे तुरंत अपनी सिद्धियों से जोड़ देता है । और इस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह भय , यह डर और यह आतंक चलता रहता है । परराम बिलकुल सही कहता है कि-''बौज्यू, कालीनाग, न तो पंडित राघवानंद की मुट्ठी में था, न केशवपंडित के आचमन में है । कालीनाग तो असल में तुम जैसे मूरख लोगों की आत्मा और बुद्धि से लिपटा हुआ और पूरे शिल्पकार खानदानों को डंसता ही चला जा रहा है । ...मेरे भैंस की खाल नहीं खींचने और भैंस का शिकार नहीं खाने से अगर सत्यानाश होता है, तो रायबहादुर किसनराम का सत्यानाश क्यों नहीं हुआ ?''[४१]

''प्रेतमुक्ति'' कहानी भी अंधविश्वासों पर आधारित है । कहानी नायक किशनराम को इस बात का डर है कि उसकी आत्मा उसकी पत्नी में है जो उसे छोड़ गई है,दूसरे उसे कोई संतान भी नहीं है, अतः उसकी सद्गति नहीं होगी । फलतः अपने मालिक केवल पांडे की वह बारबार बिनती करता है कि उसकी मृत्यु के उपरान्त ये उसकी सद्गति के लिए कोई अनुष्ठान करेंगे । किशनराम की माँ मर जाती है । केवल पांडे उस समय कहीं बाहर से आ रहे थे । अतः वे सोचते हैं कि किशनराम मर गया, क्योंकि चिता के पास उसकी टोपी पड़ी हुई थी । अतः पांडेजी वहीं सुयाल नदी पर जाकर उसकी तर्पण-विधि करते हैं । उसके बाद जब वे अपने घर आ रहे थे तब अचानक उनको याद आता है कि दूसरे दिन उनके पिता का श्राद्ध था और मन उनका शंकाकुल हो जाता है कि एक दलित-शूद्र का तर्पण करने के पश्चात् अब पिता का श्राद्ध कैसे संपन्न हो सकता है ? पांडेजी इस प्रेत से बंधे हुए थे कि अचानक

दूर से उनको किशनराम आता हुआ दिखाई देता है और जो यह बताता है कि आज उसकी सौतेली माँ की मृत्यु हुई । तब जाकर पांडे जी कहीं ''प्रेतमुक्त'' होते हैं। इस प्रकार कहानी अपने आपमें अंधविश्वासों पर आधृत है, पर इस कहानी को एक श्रेष्ठ कहानी बनाने का श्रेय उसमें निहित मानवीय-स्पर्श को जाता है । किशनराम बार-बार जो अपनी सद्‌गति की बात पांडेजी से करता है उसका मूल कारण उसके इस कथन में झलकता है-''महराज अपने तरण-तारण की उतनी चिन्ता नहीं, इसी ध्यान से डरता हूँ कि कहीं प्रेत-योनि में गया,तो उसे न लग जाऊँ ? हमारी सौतेली महतारी में हमारे बाप का प्रेत आने लगा है । महराज ! उसके बेटे गरम चिमटों से उसे दागते हैं । वह नब्बे साल की बुढ़िया रोती-बिलबिलाती है , कहीं भवानी (किशनराम की वह पत्नी जो उसे धोखा देकर भाग गई) के लड़के भी उसे ऐसे ही न दागें ? जिसे जीते जी अपना सारा हम-हुकम होते हुए भी कठोर वचन तक न कह सका कि जाने दे रे किशनराम पुतली जैसी उड़ती छोरी है, जहाँ उसकी मर्जी आये, वहीं बैठने दे, उसे ही मरने के बाद दागते कैसे देख सकूँगा ?''[४२]

१३. जाति-बिरादरी का डर :-

जाति-बिरादरी का डर भी निम्न या छोटी जातियों में ही ज्यादा होता है, इस तथ्य को हम ''गोदान'' उपन्यास में भली-भाँति देख सकते हैं । ''गोदान'' का होरी हमेशा जाति-बिरादरी और उसकी ''मरजादा'' से ही डरता रहा है । उसके कारण ही वह कर्ज के अंबार के नीचे दब जाता है । ऊँची जातियों को और धनी-संपन्न लोगों को जाति-बिरादरी का ऐसा डर नहीं होता, क्योंकि ''समरथ को नहिं दोष गुसाईं'' यह मारे समाज की एक कठोर वास्तविकता है । वह वर्ग तो नियमों का निर्माता है । दूसरों के लिए नियम, कायदे वगैरह बनाता है । स्वयं इन सबसे बहुत ऊपर है । वह तो प्रभु है,मालिक है,समाज का नियंता है । वह भला समाज की परवाह क्यों करेगा ? हमारा निम्न-मध्यवर्ग हमेशा यहाँ मरता है । ''लोग क्या कहेंगे ?''

यह उसके चिंतन का ध्रुव सत्य होता है।

आधुनिक चिंतक जैनेन्द्रजी ने अपने उपन्यास "त्यागपत्र" में प्रमोद के मुंह से कहलवाया है-"उस समय भीतर-भीतर सचमुच मुझे यह मालूम हो रहा था कि यहाँ देर तक मेरा रहना ठीक न होगा। लोग न जानें क्या समझें? मैं आज इसी पर आश्चर्य किया करता हूँ कि "लोग क्या समझेंगे ?" इसका बोझ अपने ऊपर लेकर हम क्यों अपनी चाल को सीधा नहीं रखते हैं। क्यों उसे तिरछा-आड़ा बनाने की कोशिश करते हैं। लोगों के अपने मुंह है, अपनी समझ के अनुसार वे कुछ-कुछ क्यों न कहेंगे ? उसमें उनको क्या बाधा है ? उन पर फिर किसी को क्या आरोप हो सकता है ? फिर उन सब का बोझ आदमी अपने ऊपर स्वीकार कर अपने भीतर के सत्य को अस्वीकार करता है- "यह उसकी कैसी भारी मूर्खता है ?"[४३]

पर यह मूर्खता हम सब करते हैं। आदिकाव्य रामायण के जमाने से करते आये हैं। राम ने अग्निपरीक्षा के बावजूद केवल धोबी के कहने पर क्या सीता का त्याग नहीं किया था ?

"नंगा" कहानी का ठाकुर गुमानसिंह रेवती को चाहते हुए क्यों उसके बच्चे को दुत्कार रहा है या उसे मरवाने की चेष्टा कर रहा है ? समाज का डर। लोग क्या कहेंगे कि एक डोमनी से बच्चा पैदा करवा लिया। डोमनी के बच्चे को क्या समाज ठाकुर के रूप में स्वीकार करेगा ? "लीक" कहानी का ठाकुर गोपाल सिंह बेटी जानकी के आगे तो झुक जाता है, पर प्रोफेसर कुंडलनाथ से आग्रह रखता है कि शादी बहुत धूमधाम से हो और उसमें कुंडलनाथ की जाति-बिरादरी के लोग कम आवें। कारण ? वही समाज ? "महाभोज" कहानी की शिवरत्ती हैसियत न होते हुए भी ससुर के कारज में खूब दिल खोलकर खर्च करती है। अपना एक मात्र सहारा-चाँदी की करघनी को बेच देती है क्योंकि नहीं तो समाज-बिरादरी के लोग क्या कहेंगे ? "मैमूद" कहानी के अशरफमियाँ मेहमानों के स्वागत के लिए अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च करते हैं। कारण वही है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जाति-बिरादरी का डर लोगों के उचित-अनुचित के विवेक को छीन लेता है। "रहमतुल्ला" कहानी का उदेराम अपनी बहन खिमुली की औलाद को पनाह देना चाहता है पर जाति-बाहर हो जाने के डर से दूसरे दिन उसे छोड़ आता है। यहाँ एक और तथ्य गौरतलब किया जाए कि जाति-बिरादरी का यह डर निम्नवर्ग, निम्नमध्यवर्ग और मध्यवर्ग तक सीमित है। जो लोग एकदम ऊपर है वे बेखौफ हैं, क्योंकि उन्हें जाति-बिरादरी की कोई परवाह नहीं, बल्कि जाति-बिरादरी वालों को उनकी दरकार रहती है। और जो तबका एकदम नीचे है, फुटपाथियों, जेबकतरों, कोंठियों, भिखारियों को उनको भी समाज की या जाति बिरादरी की कोई परवाह नहीं, क्योंकि बहुतेरों को तो यह भी पता नहीं होता कि उनकी जात-बिरादरी क्या है ?

१४. बच्चों के यौन-शोषण की समस्या :-

मटियानी जी ने जिस परिवेश को उठाया है उसमें चोर, डाकू, उचक्के, उठाईगीर, जेबकतरे, भिखारी, गुण्डे, मवाली, दादा वगैरह आते हैं। अतः बच्चों के यौन-शोषण की समस्या भी यहाँ मिलती है। इस यौन-शोषण में गुदा-मैथुन मुख्य है। कुछ विकृत और कुण्ठाग्रस्त सेक्स मोनियाक लोग मैथुन कार्य के लिए बच्चों का प्रयोग करते हैं। पिछले साल प्रदर्शित फिल्म "पेज-थ्री" में बच्चों के यौन-शोषण की बात भी आती है। बहुत से साधु-महात्मा और संत टाइप के लोग बच्चों का प्रयोग अपनी विकृत्तियों की संतुष्टि के लिए करते हैं। यह यौन-शोषण दो तरह का होता है। कुछ यौन-दृष्टि से अक्षम नपुंसक टाईप के लोग बच्चों के साथ अनैसर्गिक यौन-कर्म करवाते हैं। दूसरे कुछ लोग ऐसे होते हैं जो यौनकर्म के लिए सक्षम होते हैं वे बच्चों के साथ गुदा-मैथुन करते हैं। "इल्लेस्वामी" कहानी में स्वामी जब पकड़ा जाता है तब उसे धारवाड़ की बच्चों की जेल में डाला जाता है। धारवाड़ की यह जेल इस प्रकार के कृत्यों के लिए कुख्यात है। "प्यासा",

''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'', ''गरीबुल्ला'' आदि कहानियों में इसके संकेत मिलते हैं। ''चील'' कहानी में राम खेलावन की मां जब बीमार पड़ती है तब उसे दो-तीन दिन तक खाना नसीब नहीं होता। तब राम खेलावन इलाहाबाद स्थित एक आश्रम के चक्कर काटता है। यह बात उसने अपने साथ के छोकरों से सुन रखी थी कि आश्रम वाले बाबाजी छोकरों को अपने कमरे में बुलाते हैं और ढेर सारी मिठाई देते हैं। पैसे भी। वह कल कई बार आश्रम के आसपास चक्कर काटता रहा था और जब बाबा जी ने बहुत डांटकर उसे भगा दिया, तब जाकर उसे अनुभव हुआ कि वह भी अपने बाप की तरह बदसूरत और दरिद्र है और सिर के बाल इतने बढ़ चुके हैं कि भूतहा लगता होगा।''[४४] मतलब कि बाबा भी खूबसूरत और चिकने लड़कों को पसंद करते हैं। इन कहानियों के अलावा ''विट्ठल'', ''बस, इतना फर्क है'' जैसी कहानियों में शिशु-यौन-शोषण के संकेत मिलते हैं। जहाँ अमीर लड़कियों और प्रौढ़ाओं के द्वारा इनका प्रयोग होता है वहाँ भी इसे शोषण ही समझा जायेगा क्योंकि शक्ति से ज्यादा उनसे यौन-कर्म लिया जाता है जिसके कारण जल्दी ही उनके चेहरे का नूर समाप्त हो जाता है। ''जिसकी जरूरत नहीं थी''कहानी मेंएक पारसी बाबा एक लड़के को अपने यहाँ नौकरी के लिए ले जाता है। रात को पारसी उसे अपनी ''डार्लिंग'' के पास छोड़कर चला जाता है। वह एक गरीब मराठी क्रिश्चियन लड़की थी। गरीबी के कारण उसके माँ-बाप ने उसे बूढ़े पारसी के साथ उसकी शादी करवा दी थी, यों कहिए उसे बेच डाला था। पारसी बूढ़ा था, लड़की जवान थी। अतः उसकी यौन-तृप्ति के लिए वह इस प्रकार के लड़कों को नौकरी के बहाने ले आता है। पर वह लड़का उसके साथ नहीं सोता। तब दूसरे दिन उसे खदेड़ दिया जाता है।[४५] ''विट्ठल'' कहानी के विट्ठल को एक पारसी बाबा ले जाते हैं। एक दिन पारसी बाबा की लड़की रूस्तमा उसे चिपट जाती है, तब विट्ठल थोड़ा सकपका जाता है। रुस्तमा विट्ठल से कहती है-''पिछले बरस भी पापाजी रत्नागिरी से एक रामा लाए थे। वह पापाजी, बड़ी बाई और मेरे

को...तीनों को संभालता था।''[४६] तभी एक दिन विट्ठल जब बाजार अण्डे लेने गया था तो उसे वस्ताद मिल गये थे। वस्ताद के शब्दों में-''खास बात कैसे नहीं है बेटा ! कपड़े खूब शानदार पहने है,लेकिन चेहरे की रौनक उड़ गई है...कहीं बड़ी जगह फंस तो नहीं गया है, बेटे ?''[४७] वस्ताद की भाषा में बड़े घर में फंसने का मतलब किसी कच्ची उम्र के लौंड़े का बड़ी औरत, बुढ़िया या प्रौढ़ा के साथ फंसना होता है।

१५. बाल-मजदूरी की समस्या :-

जहाँ गरीबी और दरिद्रता होती है वहाँ बाल मजदूरी भी होती है। अगर गरीबों के यहाँ बच्चे-बच्चियाँ काम न करें तो उन्हें खाना ही नसीब न हो। जो लोग बाल-मजदूरी करना चाहते हैं, उसे कानून का जामा पहनाना चाहते हैं, उन्हें हमारे समाज जीवन के इस पहलू को भी देखना होगा। मटियानीजी की कहानियों में ''विट्ठल'', ''जिसकी जरूरत नहीं थी'', ''फर्क बस इतना है'', ''प्यास'', ''रहमतुल्ला'', ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'', ''दैट माय फादर वेलजी'' जैसी कहानियों में बाल-मजदूरों की कहानियाँ मिलती हैं। ''रहमतुल्ला'' कहानी का रहमतुल्ला एक यतीम बच्चा है। दो एक लोगों को छोड़कर उसका वास्ता ज्यादातर जालिम किस्म की औरतों से पड़ता है जो काम तो उससे तनतोड़ करवाती हैं, पर खाने के नाम पर रोटी के बचे-खुचे टुकड़े पकड़वा देती है। हुसैनसाहब की बेगम गुलबदन बेगम रहमतुल्ला के प्रति कितनी क्रूर और निर्दय थी उसका प्रमाण निम्नलिखित कथन हे-''हाय अल्ला, हमारे इद्दू के अब्बा को भी न जाने कब अकल आयेगी। गुलबदन बेगम ने रोटियों की देगची एक ओर रखते हुए, अपना माथा पीट लिया। ''अरे ओ मौला इस सुसरे के पेट है कि रामढोल। चोरी का माल उड़ा-उड़ाके चौकोर बकस जैसा लग रिया है। सेर, डेढ़ सेर तो चने चबा गया,ऊपर से एक दरजन के बराबर रोटियाँ साफ करके भी मेरा मुंह पे ऐसी निगा फिरा रिया है, जेसे नोंच के खा जावेगा।''[४८] जबकि दरहकीकत

बेगम ने कहा है उसका सौवां हिस्सा भी उसके पेट में गया नहीं है ।

"हलाल" कहानी के खत्तनमियाँ मूलतः निम्न जाति के हिन्दू थे, पर बचपन में ही मां-बाप के काल-कवलित हो जाने पर एक मुसलमान बूचड़ के यहाँ ही उन्हें आश्रय मिलता है । खत्तनमियाँ का बचपन भी मेहनत-मजदूरी करके ही बीतता है । बचपन से ही उन्हें बकरा-बकरियों को हलाल करना पड़ता था, फिर उसका शिकार निकालना पड़ता था,अंतड़ियों को साफ करना पड़ता था ।

१६. बचपन में ही अनाथ हो जाने की समस्या :-

स्वयं मटियानीजी का बचपन अनाथों की तरह बीता है । उनके माँ-बाप छुटपन में ही गुजर गये थे, अतः उनको चाचा-ताऊ के सहारे अपना बचपन काटना पड़ा था । मटियानी जी पढ़ना चाहते थे और उनके चाचा ने उनके आगे यह शर्त रखी थी यदि वे सुबह-शाम "शिकार की दुकान" में काम करें तो ही उनका वहाँ रहना संभव हो सकता है । [४९]

कहने का अभिप्राय यह है कि स्वयं मटियानी जी अनाथों की जिन्दगी जी चुके हैं, अतः उनके उपन्यासों और कहानियों में हमें अनेक अनाथ बच्चों की सिसकियाँ सुनाई पड़ती है । इस समस्या की दृष्टि से "लाटी", "चील", "प्यास", "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट", "दैट माय फादर वेलजी", "विट्ठल", "जिसकी जरूरत नहीं थी", "फर्क बस इतना है", "दो दुःखों का एक सुख", "रहमतुल्ला" आदि कहानियों उल्लेखनीय कही जा सकती हैं । इन कहानियों में हमें अनेक "वानका"(चेखोव) और हामिद (प्रेमचंद) मिल जायेंगे । "लाटी" कहानी की लाटी एक पगली भिखारिन है और बचपन से ही भीख माँग कर गुजारा कर रही है । "चील" कहानी का रामखेलावन अनाथ होने के कगार पर है । उसकी दादी, बाप आदि मर चुके हैं और कहानी के अंत में हमें सूचना मिलती है कि उसकी माँ भी दम तोड़ चुकी है । "प्यास" कहानी का शंकरिया भी अनाथ है । पांडुरंग मामा उसे कृष्णाबाई भिखारिन के वास्ते

अनाथ आश्रम से मामा के संबंध का वास्ता देकर पचास रूपये में खरीद लाये थे । बाद में शंकरिया को कृष्णाबाई से मां का सच्चा प्यार मिलता है, लेकिन एक दिन उसे बचाने के चक्कर में खुद कृष्णाबाई रेल के नीचे आ जाती है । फिर तो ''फुटपाथिया युनिवर्सिटी'' उसे एक नंबर जेबकतरा और उठाईगिर बना देती है । ''इल्लेस्वामी'' कहानी का स्वामी उसकी बहन यनम्मा भी दस-बारह साल की उम्र में माँ-बाप का छत्र खो देते हैं । बेंगलोर में स्वामी वेंकटेश्वर मंदिर के सामने अपनी बहिन के साथ भीख मांगता था, पर भगवान को शायद वह भी गवारा न था, अतः एक दिन चिलचिलाती धूप में उसकी बहिन यनम्मा भी दम तोड़ देती है और इस निर्मम जगत में स्वामी अकेला रह जाता है । ''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'' की नसीम, रामन्ना, करावा आदि सभी अनाथ बच्चे हैं । ''दैट माय फादर वेलजी'' कहानी का पगला भी अनाथ है, क्योंकि वेलजी सेठ उसे अपना बेटा मानने से इन्कार कर रहे हैं और उसकी माँ गंगाबाई उसी आघात से पगला गई है और मुंबई में भीख मांगकर गुजारा कर रही है । ''विट्ठल'' कहानी का विट्ठल, ''जिसकी जरूरत नहीं थी', ''कहानी का शिशिर'',''फर्क बस इतना है'' कहानी का ''मैं'' तथा सद्दू ये सब अनाथ बच्चे हैं । ''दो दुःखों का एक सुख'' कहानी मृदुला कानी को भी उसके अभिभावक मेले में छोड़ आये थे, वहाँ से अनेकों की ठोकरें खाते-खाते वह अल्मोड़ा पहुँची है और मंदिरों के सामने भीख मांग रही है । वैसे तो मिरदुला कानी अब बड़ी हो गई है, पर उसका बचपन भी अनाथों की तरह बीता है । ''रहमतुल्ला'' कहानी का रहमतुल्ला वैसे तो फतेउल्ला तथा खिमुली की संतान है, लेकिन उसके जनम के बाद वे दोनों काल-कवलित हो जाते हैं । और रहमतुल्ला यतीम हो जाता है । नाम उसका रहमतुल्ला है,पर खुदा को उस पर मानो बिलकुल रहम नहीं है, क्योंकि जो भी उस पर रहम करता है, वह खुदा को प्यारा हो जाता है । मानो उसकी नियति ही अनाथ होने की है और लिहाजा जो भी उसे सनाथ करने की चेष्टा करता है, उसे खुदा उसके निजाम में दखल-अन्दाजी समझकर उसे इस जहाँ से ''एलिमिनेट'' कर देता है ।

१७. बच्चों से भीख मंगवाने की समस्या :-

मटियानी जी ने युनिवर्सिटी की उच्च शिक्षा तो नहीं पायी है। परंतु इस संसार रूपी युनिवर्सिटी का सफा-सफा वे देख चुके हैं, पढ़ चुके हैं और गुन चुके हैं। अतः उनके कथा-साहित्य में उस सबका आना स्वाभाविक ही समझा जायेगा। उनकी अनेक कहानियों में हमें बच्चों की समस्याएँ मिलती हैं। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि मटियानीजी की कहानियों में उपेक्षित, अवमानित व प्रताड़ित बाल-जीवन की उपस्थिति जरूर पाते हैं। बच्चों की अनेक समस्याओं में "बच्चों से भीख मंगवाना" यह भी एक प्रमुख समस्या है।

मटियानी जी की आलोच्य कहानियों में "चील", "पत्थर", "प्यास", "दैट माय फादर वेलजी", "इल्लेस्वामी" आदि कहानियों में हमें उपर्युक्त समस्या का यथार्थ निरूपण उपलब्ध होता है। "चील" कहानी का रामखेलावन मुर्दों के ऊपर जो पैसे फेंके जाते हैं उनको लूटने के लिए दूसरे बच्चों के साथ जाता है। हालाँकि उसकी माँ यह कतई नहीं चाहती कि रामखेलावन इस प्रकार के काम करे। पर वह बीमार पड़ती है और फिर कभी नहीं उठ पाती। अतः रामखेलावन का आगे का भविष्य क्या होगा उसकी कल्पना हम कर सकते हैं। "पत्थर" कहानी का रमजानी अपने बेटे को कादरमियाँ को रोज के एक रूपये के हिसाब से सौंप देता है। कादरमियां लंगड़े थे और भीख मांगते थे, पर वह देखते हैं कि अगर उन्हें कोई बच्चा मिल जाए तो उनके धंधे में और बरकत आ सकती है। लेकिन जब बच्चे से रोज का एक रूपया मिलने लगा तो रमजानी का लोभ और भी बढ़ गया और उसने अपनी बेगम गफूरन से कहा कि कादरमियां की जगह यदि गफूरन भीख मांगे तो ज्यादा पैसे मिल सकते हैं। हालाँकि गफूरन एक मेहनती औरत है, मेहनत मजदूरी कर सकती है, पर कतई नहीं चाहती कि बच्चे को लेकर मुंबई की लोकल ट्रेनों में भीख मांगती फिरे। लेकिन गफूरन क्या करे ? वह अपने "खुदा से लड़ लेगी, पर अपने शौहर से न लड़ेगी।"[५०] फलतः बच्चे को लेकर भीख मांगती है, पर भीख मांगने का अभ्यास न होने के कारण उसे उतने पैसे

भी नहीं मिलते । तब बेगैरत रमजानी एक दिन गफूरन से कहता है-''खुदा के बन्दे रह कहाँ गये हैं बेगम ? खामोश बच्चे को तो मां भी दूध नहीं पिलाती है । कहती कि इस बच्चे का बाप मर गया है । ''[५१] लेकिन ऐसी बात वह मजहब परस्त औरत कैसे बर्दाश्त कर सकती है ? हमेशा खामोश रहने वाली गफूरन अपने शौहर को एक तमाचा जड़ देती है । रमजानी भी खून का घूँट पीकर रह जाता है । दूसरे दिन वह खुद बच्चे को लेकर निकल पड़ता है, लेकिन ट्रेन में एक यात्री जब उसके बच्चे को तमाचा मारता है, तब रमजानी की सोई हुई गैरत जाग उठती है और वह उस यात्री को दो-चार तमाचे रसीद करता हुआ अगले स्टेशन पर उतर जाता है । उस दिन से रमजानी सारी आरामतलबी और हरामजदगी छोड़कर काम पर लग जाता है । इस प्रकार कहानी के अन्त में हम देखते हैं ''पत्थर'' को अपने अब्बा मिल जाते हैं । रमजानी अपने बच्चे को ''पत्थर'' कहता था । लेकिन बच्चों का प्रयोग भीख के कारोबार में होता है,यह सत्य इस कहानी में उजागर हुआ है ।

''प्यास'' कहानी में तो पांडुरंग मामा नामक एक व्यक्ति भीख मांगने-मँगवाने के व्यवसाय को एक ऐसा आधुनिक ''टच'' देता है कि उसे तो आई.आई. एम. वालों को मैनेजमेण्ट के बारे में व्याख्यान हेतु बुलाना चाहिए । एक स्थान पर मामा खुद कहते हैं-''देख बाई, मेरा नाम भी पांडुरंग मामा है और अट्ठावन बरस में दस बरस खुद भीख मांग कर और बत्तीस बरस औरों से भीख मंगवा-मँगवाकर ही काट लिये हैं । समझी क्या ? जिस समय तू इस कपास के फूल की माफिक गोरे छोकरे की मिट्टी को गोद में लेकर भीख मांगेगी, तो दस रतली डालडे डिब्बा चाँदी की चिल्लर से भर जाएगा । गोरे छोकरे की लाश से काले छोकरों की लाशों की बनिस्बत दस गुना ज्यादा नामा इकट्ठा किया जा सकता है । पिछले बरस तेरा गोरा-चिट्टा बेटा मर गया तो तूने कितना...''[५२] उन दिनों में पांडुरंग ने लगभग पचास बच्चे इस व्यापार में छोड़ रखे थे और घाटकोपर में उसने बीड़ियों का कारखाना खोल लिया था । उस कारखाने की पांडुरंग बिल्डिंग भी उसकी अपनी थी और बम्बई के

अधिकांश सयाने भिखारी छोकरों और भिखारिनों में "मामा छाप बीड़ी" बहुत बिकती थी। [५३]

तात्पर्य यह कि अस्पतालों, फुटपाथों, अनाथालयों आदि स्थानों से छोकरे-छोकरियों को किसी भी तरह उपलब्ध करके उनको भीख के लिए बेच देना या स्वयं उनसे भीख मंगवाना यह मामा का व्यवसाय था। ऊपर जो वक्तव्य दिया है उसमें मामा कृष्णाबाई नामक भिखारिन से बात कर रहे है। कृष्णाबाई एक विधवा भिखारिन है और उसने मामा को बोल रखा था कि कोई लड़का उनके हाथ चढ़े तो वह सबसे पहले उससे बात करें, क्योंकि कृष्णाबाई जानती है कि बच्चे वाली भिखारिनों को बिना बच्चे-वालियों की तुलना में ज्यादा भीख मिलती है।

"दैट माय फादर वेलजी" में भी इस समस्या के संकेत मिलते हैं। "इल्लेस्वामी" कहानी का स्वामी अपने बचपन में अपनी बहन के साथ भीख मांगता था। इस तरह की ऐसी अनेक कहानियाँ हैं जिनमें इस समस्या को लेखक ने उठाया है।

१८. बच्चों से अवैध काम करवाने की समस्या :-

बच्चों पर जहाँ तरह-तरह के अत्याचार होते हैं वहाँ उनके हाथ में किताब थमाने के बदले उन्हें गैर-कानूनी धंधों में ले जाने के काम भी धड़ल्ले से नगरों और महानगरों में हो रहे हैं। बच्चों को अपराधी बना देना एक विकट समस्या है। मटियानीजी ने अपनी कहानियों में मुंबई के फुटपाथों और झोंपड़पट्टियों के जीवन का आलेखन किया है, अतः उनकी कहानियों में इस समस्या का निरूपण न हो ऐसा तो हो नहीं सकता। उनकी "प्यास" , "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट", "दैट माय फादर वेलजी", "इल्लेस्वामी", "फर्क बस इतना है", "विट्ठल" आदि कहानियों में हम इस समस्या के रूबरू हो सकते हैं।

"प्यास" कहानी का शंकरिया इसका एक उदाहरण है। इस कहानी में

यह बताया है कि छोटे बच्चों से भीख मंगवायी जाती है और बाद में जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं उन्हें चोरी करना, जेब काटना, दारू बेचना, ड्रग बेचना, लड़कियों के लिए दलाली करना जेसे अवैध और असामाजिक कामों में झोंक दिया जाता है। ''प्यास'' कहानी की शुरुआत ही इस घटना से होती है जिसमें शंकरिया ग्राण्ट रोड पर एक पारसी महिला की सोने की चेइन तोड़ते हुए पकड़ा जाता है। पुलिस और पब्लिक उसे बेतहाशा मारती है। यह वही शंकरिया है जिसे कृष्णाबाई भिखारिन ने पांडुरंग मामा से एक रूपया रोज पर खरीदा था। बाद में कृष्णाबाई तो शंकरिया को ही बचाते हुए ट्रेन के नीचे कटकर मर गयी थी और शंकरिया मामा की रखैल ताराबाई के जिम्मे पड़ गया। जब शंकरिया तेरह साल का होता है तब जेकब दादा के गिरोह में दारू की बोटलें ग्राहकों तक पहुँचाने का काम करता था। जब पहली बार वह दारू की बोटल के साथ पकड़ा गया था तब उसे बच्चों के जेल धारवाड में पहुँचा दिया गया था। बच्चों के जेल में वार्डरों, चौकीदारों तथा पुलिसवालों ने उसके साथ बड़ा ही अमानुषिक व्यवहार किया था। जेल में उसकी मुलाकात यासीन से हुई थी जो पाकेटमार था। जेल से छूटने के बाद यासीन शंकरिया को अपने उस्ताद कादिर के पास ले जाता है जो पाकेटमारी और जेबकतरी की कला के उस्ताद माने जाते थे। कादिर उस्ताद उसे कहते है-''बेटे, वफादारी से काम करेगा, तो तेरी ऊंगलियों में जादुई कबूतर बाँध दूँगा, जादुई कबूतर! फिर जिसकी गिरह में सींक फँसाएगा, जादुई परिंदे खजूरछाप नोटों की गड्डियाँ बाहर खींच लाएंगे।''[५४] कादिर उस्ताद उसे इस कला के तीन सौदे सिखाते हैं- सींक का सौदा, लक्कड़ का सौदा और झटके का सौदा। सींक के सौदे में सिफत के साथ पाकेट या नोट उड़ाए जाते हैं, लक्कड़ के सौदे में जेब काटनी होती है और झटके के सौदे में गले की चेइन इत्यादि को तोड़कर भागने का होता है।

''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'' का रामन्ना भी इसी प्रकार के काम करता है। ''दैट माय फादर वेलजी'' में भी इस समस्या के संकेत मिलते हैं।

''चिथड़े'' कहानी का गेंदी कोल्हापुर का एक सीधा-सादा, भोला और मेहनती लड़का है। पांडु उसका बचपन का दोस्त है। वह मुंबई में रहता है और वहाँ से गाँव आया है। उसने अब अपना नाम प्रीतम रख दिया है। वह गेंदी के आगे मोहमयी मायानगरी की ऐसी तस्वीर रखता है कि भोला-भाला गेंदी उसकी बातों में आ जाता है और कुछ रूपये-पैसे लेकर उसके साथ चल पड़ता है। प्रातः दादर स्टेशन पर जब गेंदी की आँख खुली तो देखता है कि पांडु उसका सब सर-सामान पैसा लेकर गायब हो चुका था। गेंदी का टिकट भी उसके पास था। अतः गेंदी को जेल की हवा भी खानी पड़ती है। कहने का अभिप्राय यह है कि पांडु मुंबई आकर ही अपराध की दुनिया में फँस गया था। अब लोगों को ठगना, उल्लू बनाना, उनके पैसों की चोरी करना ये बातें उसके लिए सामान्य हो चुकी थीं कि वह अपने गाँव के दोस्त गेंदी को भी नहीं बख्शता। [५५]

''इल्लेस्वामी'' कहानी का स्वामी भी बचपन से अवैध कामों में पड़ गया था और बाद में सब प्रकार के गुनाहों की प्रक्रिया से गुजरते हुए वह अब मुंबई का एक दादा बन गया था और सेठों से सुपारी उठाने लगा था। ''विट्ठल'' कहानी का विट्ठल करसनदास जवेरी की बीबी सोमावती और गेना पठान की नाजायज औलाद है। यह पिक्चरों के लिए थियेटर के आगे ''बूम'' मारने का, बाद में टिकिटों का कालाबाजार करना और वेश्याओं के लिए ''पण्डागिरी (दलाली) करना ये सब काम वह करता है। जैसे जगद्गुरु शंकराचार्य ने वैदिक धर्म की संस्थापना के लिए चार मठ बनाए थे, सरकार ने ''उर्वशी-कर्म'' के संस्थापन-पोषण के लिए ये चार धाम रख छोड़े हैं (उत्तर में फाकलेण्ड रोड, दक्षिण में गोलपीग, पूरब में कमाठीपुरा और पश्चिम में त्रिभुवन रोड) विट्ठल ने ये चारों धाम तभी कर लिए थे, जब उसे निम्मी की उमर तक मालूम नहीं थी। इस दिशा में वह किसी हाजी या पण्डे से कम नहीं था। जसोदाबाई की सातवीं दफा अस्पताल से लौटी कुलसुम को वह ''नई चिड़िया'' बताता था, जिसके बदले में जसोदाबाई उसे पंढरपुरी पान खिलाया

करती। पीला पत्ता- काला कांडी।''[५६]

१९. धर्म-वंचना की समस्या :-

धर्म का काम तो मनुष्य को राह दिखाना है। मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाना है। पर कई बार मनुष्य अपने वैयक्तिक स्वार्थों के लिए धर्म का प्रयोग करता है, तब उसे धर्म-वंचना की समस्या कह सकते हैं। पठित कहानियों में ईसाई-संदर्भ से जुड़ी कहानी ''चुनाव'' में हमें धर्म-वंचना का एक उदाहरण मिलता है। इस कहानी का पंडित कृष्णानंद एक ब्राह्मण पुरोहित है। गाँव में उसका मान-सम्मान और प्रतिष्ठा है। पर वह कमला शिल्पकारिन को प्रेम करता है और यह प्रेम शरीर की मर्यादाओं को भी पार कर जाता है। फलतः कमला को पंडितजी का गर्भ रह जाता है। कृष्णानंद एक द्वन्द्व से गुजरता है। कभी मन सोचता है कि वह अगर अपनी जिम्मेदारी से पलड़ा जाड़ ले तो कमला क्या कर सकती है। पर समाज और मन और आत्मा की जद्दोजहद में जीत आत्मा की होती है और वे दोनों लखनऊ भाग आते हैं और वहाँ जाकर वे पादरी जानसन चौहान को मिलते हैं। चौहान साहब उन दोनों को आश्रय देते हैं और उन्हें ईसाई धर्म का बपतिस्मा दिलाते हैं। कृष्णानंद को वहाँ की मिशनरी हाईस्कूल में चपरासी की नोकरी भी मिल जाती है और कमला पादरी साहब के घर के छोटे-बड़े काम करती है। पहले तो दोनों एक ही कोठरी में रहते हैं, पर बाद में उनके रहने के स्थान अलग-अलग हो जाते हैं। कमला अंग्रेजी सीखने लगती है। वह चौहान साहब के भतीजे विलसन चौहान के साथ बैड-मिण्टन और टेनिस खेलने लगती है। कमला से वह अब कैथरीन हो गई है। कृष्णानंद के.एन. क्रिस्टी हो गए हैं। कमला को अधूरे महीने में मृत बच्चा पैदा होता है अतः कमला और कृष्णानंद के बीच का एक सेतु जो था वह भी खत्म हो जाता है। कमला अब बदल गई है। उसे कृष्णानंद के साथ अब अच्छा नहीं लगता, उसका ज्यादातर समय अब विलसन के साथ गुजरता है। अब कृष्णानंद की चारपाई कब्रिस्तान के चौकीदार मि. गुडविल के साथ लगायी

जाती है । मि. गुडविल से ही एक दिन कृष्णा को पता चलता है कि कैथरीन अब मिसेज विलसन चौहान होने वाली है । गाँव में कृष्णा ब्राह्मण था,ऊँची जाति का था । कमला से उसकी स्थिति बेहतर थी । यहाँ स्थिति बिलकुल विपरीत हो गई है । कृष्णा चपरासी हो गया है और कमला अब ऊँचे लोगों में उठने-बैठने लगी है । उसका स्टेटस ऊपर हो गया है । कृष्णा पहले तो पादरी साहब की बातों को ध्यान, आदर और भक्ति-भाव से सुनता था पर अब उसे उनकी बातों से वितृष्णा होने लगती है। आरंभ में पादरी साहब ने एक पुस्तिका दी थी, जिसमें लिखा था-''तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना और नियुक्त किया है । (यूहन्ना :१५ :१७)''[५७] पादरी साहब प्रायः उसे कहते थे- ''प्रभु उन सभी लोगों पर प्रसन्न रहते हैं, जो ईर्ष्या-द्वेष से मुक्त और सहनशील है । जो अपने जीवन के तमाम सत्यों को सहज भाव से स्वीकारते हैं और उन्हें प्रभु की शरण में समर्पित करके, खुद मुक्त हो जाते हैं ।...अपनी आत्मा के अनुसार आचरण की पूरी आजादी देना ही सच्चा मनुष्य धर्म है । धर्म इस बात की पूरी-पूरी आजादी देता है । औरत अपने लिए अनुपयुक्त पति या प्रेमी को तलाक देकर, उपयुक्त और सही पति या प्रेमी का चुनाव कर ले ।''[५८] कृष्णा को अब सब समझ में आने लगा था । वह फादर को साफ-साफ सुना देना चाहता था कि प्रभु ने नहीं, बल्कि उसने ही उसको अपने लिए चुना था,अपना नौकर बनाने के लिए। वस्तुतः जिस कमला शिल्पकारिन को पाने के लिए उसने ईसाई धर्म स्वीकार किया था, वह कारण, वह मकसद ही, अब समाप्त हो चुका था । वह अपने को ठगा-सा, वंचित-सा महसूस करता है । फलतः एक दिन कमला शिल्पकारिन की वह किनारीदार धोती की फांसी लगाकर वह आत्महत्या कर लेता है । इस प्रकार यह कहानी ईसाई धर्म का कोई अच्छा पक्ष नहीं रखती, बल्कि प्रमाणित करती है कि कौए सर्वत्र काले होते हैं । क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम, क्या ईसाई सब जगह धर्म के ठेकेदार धर्म की व्याख्या अपनी सुविधा और सहूलियत की दृष्टि से बदलते रहते हैं ।

२०. अन्तर्जातीय विवाह की समस्या :-

हमारे यहाँ जाति के बंधन बहुत ही कड़े और कसे हुए हैं, अतः एक जाति का व्यक्ति यदि किसी दूसरी जाति की व्यक्ति से विवाह करना चाहता है तो बड़ी समस्या पैदा हो जाती है। किसी जमाने में इस प्रकार के विवाह तो होते ही नहीं थे, पर इधर समाज में जो बदलाव और परिवर्तन आया है उसके कारण कुछ इस तरह के विवाह होने लगे हैं। पर ऐसे विवाहों में भी यदि विवाह सवर्णों--सवर्णों के बीच होते हैं, तब ज्यादा सामाजिक-पारिवारिक विरोध नहीं होता और अभिभावक अपनी स्वीकृति की मुहर लगा देते हैं। लेकिन जहाँ सवर्ण-अवर्ण के बीच विवाह हो, या विधर्मियों में विवाह हो, तो विवाह करनेवाले युग्म को लोहे के चने चबाने पड़ते हैं, दिन में तारे नजर आने लगते हैं। ऐसे में कई बार हत्याएँ तक हो जाती हैं। भारत में जातिवाद को दूर करने के लिए डॉ. बाबा साहब आंबेडकर आंतरर्जातीय विवाह की तरफदारी करते थे।

मटियानीजी की कहानियों में ''लीक'' कहानी सीधे अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को बहुत ही व्यंग्यात्मक तथा विनोदात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है। इस कहानी का ठाकुर गोपालसिंह डुंगरी गाँव की जानी-मानी हस्ती है। जर, जमीन और जोरू इन तीनों मामलों में ठाकुर साहब का कोई सानी नहीं है। पर ठाकुर साहब की सारी हेंकड़ी काफूर हो जाती है, जब उनकी लाडली बेटी जानकी प्रोफेसर कुंडलनाथ के साथ विवाह करने की ठान लेती है। यहाँ गौरतलब बात यह है कि एक पीढ़ी पहले ठाकुर के पिता किरपालसिंह ने अपनी छोटी पुत्री कलावती का रिश्ता केवल इसलिए ठुकरा दिया था कि सबलसिंह बौर धन-दौलत के मामले में तो किरपाल सिंह से थोड़े ऊपर थे, लेकिन जातिगत संतरन में थोड़े नीचे आते हैं। केवल उन्नीस-बीस का अंतर है, लेकिन फिर भी उन्होंने बौरों के यहाँ का रिश्ता यह कहकर ठुकराया था कि बौर को बेटी देने से, ऊँची जाति के किसी बेठौर गरीब को बेटी देना पसंद करूँगा।[५९] लेकिन उनके सुपुत्र गोपाल सिंह को बेटी के आगे झुकना पड़ रहा

था। यह कमाल शिक्षा का है। जानकी शिक्षित है और साफ तौर पर कह देती है कि "बौज्यू" ने बिड़लगों के गोपाल चाचा जैसी हठधर्मिता यदि दिखाई तो मैं गोली खाके तो नहीं मरूँगी मगर अपनी राजी-खुशी से कुंडल के साथ चली जाऊँगी। ६० सबलसिंह तो फिर भी क्षत्रिय और सजातीय थे, कुंडलनाथ तो कनफड़ा नाथ हैं जो कुमाऊँ के जातिगत संस्तरण में काफी नीचे अर्थात् कि शूद्रों में आते हैं। कुंडल छोटी जाति का था पर मिडिल पास करके इलाहाबाद जाकर प्रोफेसर बनकर लौटता है और पूरे अलमोड़ा में "प्रोफेसर कुंडलनाथ, प्रोफेसर कुंडलनाथ" होने लगता है।

इसके अतिरिक्त 'चिट्ठी के चार अक्षर', "सावित्री", "गोपुली गफूरन", "झुरमुट", "दीक्षा", "चुनाव", "छाक", "रहमतुल्ला" आदि कहानियों में हमें इस समस्या की उपस्थिति दृष्टिगोचर होती है।

"चिट्ठी के चार अक्षर" की नायिका दुर्गा नाई जाति की है और वह जिसे प्रेम करती है वह प्रतापसिंह ठाकुर जाति का है। पहले तो प्रताप की हिम्मत नहीं पड़ती, लेकिन जब फौज में चला जाता है और अपने बलबूते पर कुछ बन जाता है, तब दुर्गा और उसके लड़के को अपना लेता है। कहना न होगा कि दुर्गा को प्रताप का गर्भ गांव छोड़ने के पहले ही रह गया था। सावित्री कहानी की सावित्री एक मिरासीन है और उसका प्रेमी ठाकुर बलराम है और वह उसके साथ अपनी गृहस्थी बसाती है। "गोपुली गफूरन" और "रहमतुल्ला" इन दोनों कहानियों की गोपुली और खिमुली शिल्पकारिन है और विधवा हो जाने के बाद उन्हें आश्रय मुसलमानों से ही मिलता है। फलतः वे उनसे निकाह पढ़कर मुस्लिम धर्म अंगीकृत कर लेती है। इस प्रकार ये विवाह अंतर्जातीय ही नहीं अंतर्धर्मीय भी है। "झुरमुट" कहानी के धरणीधर उप्रेती सुप्रिया मसी के रूपाकर्षण में अपनी पत्नी तारा पंडिताइन को छोड़कर ईसाई धर्म अंगीकार कर लेते हैं और सुप्रिया मसी से मैरिज कर लेते हैं। "दीक्षा" कहानी सावित्री कोई दलित जाति की स्त्री है। उसका पति हैजे में मारा जाता है। उसके बाद पति-वियोग में वह आत्महत्या कर लेती है, पर

कुछ लोग उसे बचा लेते हैं। लोग बचा तो लेते हैं पर उसके बाद उसका दायित्व लेने के लिए कोई तैयार नहीं होता, फलतः वह कुछ मिशनरी लोगों से मिलती है। उनमें एक मिस गोम्स है जो सावित्री को अपने यहाँ रख लेती है। सावित्री का बपतिस्मा होने जा रहा है और कहानी में यह संकेतित किया है कि बपतिस्मा के बाद सावित्री मिसेज गोम्स होने वाली है, अर्थात् उसकी शादी मिस गोम्स के भाई मि. गोम्स से होनेवाली है। ''चुनाव'' कहानी का कृष्णानंद जाति से ब्राह्मण है। गाँव की कमला शिल्पकारनी से उसे प्रेम हो जाता है, जिसके फलस्वरूप कमला गर्भवती हो जाती है। गाँव में कमला को अपनाना आसान नहीं था। अतः ये दोनों लखनऊ आते हैं। यहाँ उनकी भेंट पादरी चौहान से होती है। फादर उन दोनों को आश्रय देते हैं। कृष्णानंद के.एन. क्रिस्टी हो जाता है और कमला कैथरीन। पर आगे चलकर कैथरीन पादरी साहब के भतीजे विल्सन चौहान से विवाह करेगी ऐसे संकेत कहानी में मिलते हैं। इस प्रकार इन कहानियों में हम प्रायः देखते हैं कि छोटी जाति की लड़की से विवाह करने के लिए लोगों को अपना धर्म बदलना पड़ता है। धर्मान्तरण का एक कारण इस प्रकार के विवाह भी है।

कुछ अन्य समस्याएँ :-

ऊपर जिन समस्याओं का आकलन किया है इनके अतिरिक्त और भी कई समस्याएँ मटियानीजी की कहानियों में मिल सकती है , जैसे अस्पृश्यता की समस्या, फिल्मी गीतों के भोंड़ेपन की समस्या, वर्ली-मटका और जुए की समस्या, गलत राजनीति का शिकार हो जाने की समस्या आदि-आदि। ''घुघुतिया त्यौहार'', ''सतजुगिया आदमी'', ''नंगा'', ''प्रेतमुक्ति'', ''लाटी'' आदि कहानियों में दलित-जीवन का चित्रण मिलता है, अतः इन कहानियों में कम-ज्यादा यह समस्या आयी है। किन्तु एक बात यहाँ ध्यातव्य रहेगी कि कुमाऊँ प्रदेश, यू.पी. आदि में यह समस्या बहुत प्रकट रूप में सामने नहीं आती, क्योंकि अस्पृश्यता का वह रूप यहाँ नहीं मिलता जो

गुजरात या दक्षिण में मिलता है । कोई कह सकता है कि गुजरात में अब अस्पृश्यता कहाँ है ? पर दूर-दराज के गाँवों में अस्पृश्यता आज भी दृष्टिगोचर होती है ।

फिल्मी गीतों का भोंड़ापन हमें ''सीने गीतकार'' नामक कहानी में मिलता है । ''प्यास'',''इब्बूमलंग'',''एक कोप चा : दो खारी बिस्किट'' जैसी मुंबई-बेइज्ड कहानियों में हमें वर्ली-मटका की समस्या मिलती है । ''जिबूका'' कहानी में हमें जुए की समस्या मिलती है । ''हत्यारे'' कहानी में यह बताया है कि किस प्रकार पिछड़ी जाति के लोग अगड़ी की बातों में आ जाते हैं और कई बार अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं । ''नेताजी की चुटिया'' में भी गलत राजनीति का शिकार एक व्यक्ति को बनाया जाता है ।

निष्कर्ष :-

अध्याय के समग्रावलोकन से हम निम्नलिखित निष्कर्षों तक पहुँच सकते हैं-

१. हमारी आलोच्य कहानियाँ तीन वर्गों में विभक्त हैं -१. दलित-संदर्भ की कहानियाँ, २. ईसाई संदर्भ की कहानियाँ और ३. मुस्लिम संदर्भ की कहानियाँ ।

२. इस संदर्भ-त्रयी की कहानियों में दरिद्रता की समस्या, आवास की समस्या, जातिवाद की समस्या, धर्मान्तरण की समस्या,वेश्या समस्या, बीमारियों की समस्या, हैसियत से ज्यादा खर्च करने की समस्या, ज्यादा संतानों की समस्या, निम्न जातियों के अपमान की समस्या,यौन-शोषण की समस्या, अंध-विश्वासों की समस्या,जातिगत नफरत की समस्या, जाति-बिरादरी के डर की समस्या, बाल-मजदूरी की समस्या, बच्चों के अनाथ होने की समस्या, बच्चों के यौन-शोषण की समस्या, बच्चों से अवैध काम लेने की समस्या, धर्म-वंचना की समस्या, अन्तर्जातीय विवाह की समस्या, अस्पृश्यता की समस्या, वर्ली-मटका और जुए की समस्या, गलत राजनीति के शिकार होने की समस्या जैसी समस्याएँ

मिलती हैं।

३. ऊपर उल्लिखित समस्याओं में से दरिद्रता की समस्या, आवास की समस्या, जातिवाद की समस्या, धर्मान्तरण की समस्या, वेश्या समस्या, बीमारियों की समस्या, हैसियत से ज्यादा खर्च करने की समस्या, निम्न जातियों के अपमान की समस्या, यौन-शोषण की समस्या, जातिगत नफरत की समस्या, जाति-बिरादरी के डर की समस्या जैसी अधिकांश समस्याएँ हमें दलित-संदर्भ की कहानियों में मिलती हैं।

४. मुस्लिम संदर्भ की कहानियों में जातिगत नफरत की समस्या, गरीबी की समस्या, अधिक बच्चों की समस्या, अन्तर्जातीय विवाह की समस्या,धर्मान्तरण की समस्या, बच्चों से अवैध काम लेने की समस्या, वेश्या समस्या, हैसियत से ज्यादा खर्च की समस्या जैसी समस्याएँ मिलती हैं।

५. ईसाई संदर्भ की कहानियों में धर्मान्तरण की समस्या, धर्म-वंचना की समस्या, अन्तर्जातीय और अन्तर्धर्मीय विवाहों की समस्या, अनाथ होकर धर्म परिवर्तन की समस्या जैसी समस्याएँ मिलती हैं।

*

सन्दर्भानुक्रम :-

१.द्रष्टव्य : कहानी : रहमतुल्ला : संकलन-त्रिज्या, पृ. २०३

२. द्रष्टव्य : कहानी : पत्थर : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. १४२-१४३

३. द्रष्टव्य : कहानी : एक कोप चा : दो खारी बिस्किट : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. ८२-८७

४.कहानी : गोपुली गफूरन : संकलन-पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ, पृ.५९

५. कहानी : दीक्षा : संकलन-सूखा सागर : पृ. १२०-१२८

६. कहानी : नीतशी : संकलन-सूखा सागर : पृ. ४७

७. कहानी : चील : संकलन-त्रिज्या, पृ. १००-१०३

८.कहानी : प्यास : संकलन-त्रिज्या, पृ. ११९

९.कहानी : प्यास : संकलन-त्रिज्या, पृ. ११९

१०. कहानी : रहमतुल्ला : संकलन-त्रिज्या, पृ. २०५

११. कहानी : रहमतुल्ला : संकलन-त्रिज्या, पृ. २०३

१२. कहानी : नंगा : संकलन- बर्फ की चट्टानें, पृ. १६१

१३. द्रष्टव्य : कहानी : लीक : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. १३२

१४. द्रष्टव्य : कहानी : एक कोप चा : दो खारी बिस्किट : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. ८१-९०

१५. द्रष्टव्य : कहानी : इल्लेस्वामी : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ,पृ.११-१६

१६.लेख : प्रेमकुमार मणि : अर्जुनों का विद्रोह : हंस : जून-२००६, पृ.३०

१७. सूखे सेमल के वृन्तों पर : डॉ. पारुकान्त देसाई- पृ ६७

१८. कहानी : सतजुगिया आदिमी : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. १३२

१९. कहानी : घुघुतिया त्यौहार : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. ५६१

२०. द्रष्टव्य : कहानी : लीक : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. १२७

२१.द्रष्टव्य : संस्कृति के चार अध्याय : डॉ. रामधारी सिंह दिनकर : पृ. २५८-२६२

२२. द्रष्टव्य : कहानी : गोपुली गफूरन : इसी प्रबंध में।

२३. कहानी : रहमतुल्ला : संकलन- भविष्य तथा अन्य कहानियाँ, पृ. ९२

२४. कहानी : एक कोप चा : दो खारी बिस्किट : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. ८३

२५. कहानी : भँवरे की जात : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. ५८

२६. कहानी : भँवरे की जात : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. ५१

२७. कहानी : सावित्री : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. १७४-१७५

२८. कहानी : इल्लेस्वामी : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. १५

२९. कहानी : इब्बूमलंग : संकलन-त्रिज्या, पृ. १५७-१५८

३०. कहानी : नंगा : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. १६१

३१. 'गाबडगो'- कुंमाऊँ में अवांछित गर्भ को नदी में बहा देने को 'गाबडगो' कहते हैं।

३२. कहानी : गोपुली गफूरन : संकलन-पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ, पृ. ४८

३३. वही, पृ.४८

३४. साहित्यकार प्रेमचन्द : डॉ. मन्मथनाथ गुप्त, पृ.२७६-२७७

३५. कहानी :मैमूद : संकलन-त्रिज्या, पृ. १०७-१०८

३६. कहानी : महाभोज : संकलन- भविष्य तथा अन्य कहानियाँ, पृ. १०६

३७. वही, पृ. १०७

३८. वही, पृ. १०८

३९. कहानी : घुघुतिया त्यौहार : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. ५५८

४०. कहानी : सतजुगिया आदमी : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. १३२

४१. वही, पृ. १३२

४२. कहानी : प्रेतमुक्ति : संकलन- बर्फ की चट्टाने, पृ. ४७२

४३. त्यागपत्र : जैनेद्र कुमार,पृ. ७४

४४. कहानी : चील : संकलन-त्रिज्या, पृ. १००

४५.कहानी :जिसकी जरूरत नहीं थी : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. २०

४६.कहानी : विठ्ठल : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. ८०

४७. वही, पृ. ७९

४८.कहानी : रहमतुल्ला : संकलन-भविष्य तथा अन्य कहानियाँ, पृ. ९६-९७

४९. द्रष्टव्य : भूमिका : मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. १०

५०.कहानी : पत्थर : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. १४५

५१. वही, पृ. १४५

५२. कहानी : प्यास : संकलन-त्रिज्या, पृ. ११७

५३. कहानी : प्यास : संकलन-त्रिज्या, पृ. ११९

५४. कहानी : प्यास : संकलन-त्रिज्या, पृ. १२३

५५.द्रष्टव्य : कहानी : चिथड़े : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. ३१-३७

५६.कहानी : विठ्ठल : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. ७५

५७.कहानी : चुनाव : संकलन-सूखा सागर , पृ. ६२

५८. वही, पृ. ६४

५९.कहानी : लीक : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. १२७

६०.कहानी : लीक : संकलन-मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. १२८